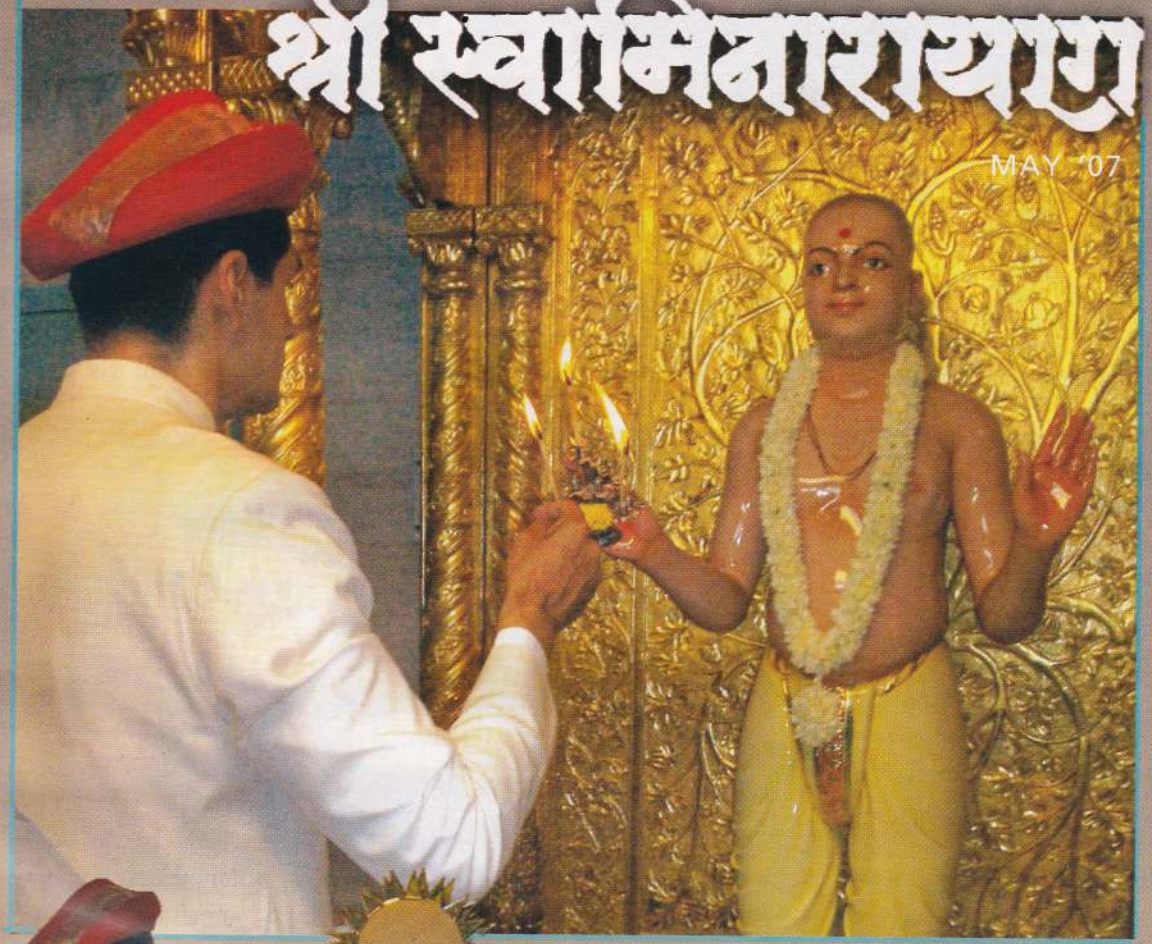
Rs. 5/-

# SHREE SWAMINARAYAN
# श्री स्वामिनारायण

MAY '07



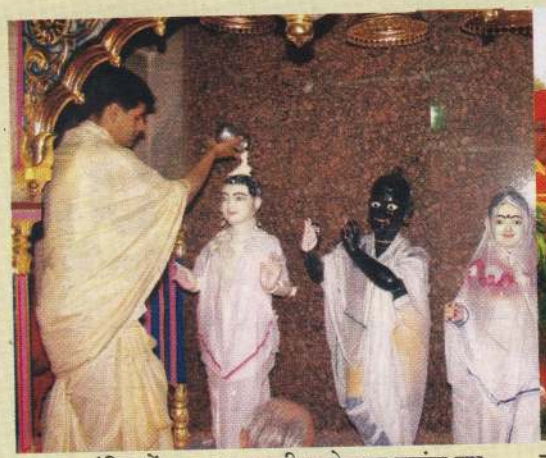






श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर रंगमहल के श्री घनश्याम महाराज, हवेली के श्री घनश्याम महाराज तथा श्रीगणपतिजी एवं श्री हनुमानजी को पुनः प्राण प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री।

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



उनावा मंदिर में रजत शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



उनावा मंदिर में रजत शताब्दी महोत्सव के प्रसंग पर प्रदर्शनीको खुल्ला करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री एवं यज्ञ की पूर्णाहुति करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



चराडवा मंदिर में २२५ दिन के महामंत्र धुनि की पूर्णाहुति करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



चराडवा मंदिर की सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री ।



कोठंबा मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव करते हुए पू. महाराजश्री के साथ लाभ लेते हुए आत्मप्रकाशदसाजी ।



कोठंबा में शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।




संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
( महंत स्वामी )

**मूल्य**

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह ( मास ) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र ( प्रधान पंडित )
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in



શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

# श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ६ मई -२००७


## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| १. | अरमदीयम | २ |
| २. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा | ३ |
| ३. | प्रांतिज में नवलबहन और महाप्रभु का मिलाप | ४ |
| ४. | देव द्रव्य | ६ |
| ५. | अनोरवातीर्थधाम गवाडा | ७ |
| ६. | हम सभी का श्री स्वामिनारायण म्युझियम | ८ |
| ७. | पूज्य बडे महाराजश्री तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री की अपने आश्रितो पर पूर्ण कृपा | १० |
| ८. | श्री सत्शास्त्र व्यसनाय नमः | ११ |
| ९. | सत्संग सुरभि : "हम सत्संग किये है, चोरी नहीं किये है" | १३ |
| १०. | सत्संग बालवाटिका<br>(१) सम्पत्ति को लात मारने वाला संत बन शकता है<br>(२) मृत्यु स्वीकारना सरल नहीं है | १४ |
| ११. | भक्तिसुधा<br>(१) एकादशी को रात्रि जागरण सभा<br>(२) पूज्या गादीवालाजी<br>(३) शिर साटे नटवर<br>(४) शुष्कवेदांत | १६ |
| १२. | प्रश्नपेटी | १९ |
| १३. | समाचार वृत्तांत | २० |



प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

# अमृतधारा

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

भगवान की भजन करने में अथवा मोक्ष मार्ग पर चलने के लिए जो विघ्न उपस्थित करे उसे भगवान स्वामिनारायण ने माया कहा है। ऐसा विघ्न धन, सम्पत्ति या परिवार ही उपस्थित करता है। ऐसा ही नहीं बल्कि व्यक्ति की इच्छा एवं सेवा करने की भावना जब अत्यधिक प्रबल बनती है, वही भावना जब आसक्ति की तरफ प्रेरित हो जाती है तब भजन या मोक्ष मार्ग में विघ्न उपस्थित होता है। त्याग, वैराग्य, सेवा एवं भक्ति का सुन्दर नाम धारण करने मात्र से ही आसक्ति नहीं छूटती बल्कि इस में अहंकार और अधिक बढता जाता है। अहंकार जहाँ है वहीं पतन है। इसीलिये भरत की तरह समग्र पृथ्वी का राज्य छोडे, विशाळ कुटुम्ब छोडे, फिर भी वह पामर जीव एक छोटे मृग शावक में बंध जाता है। यही बात आज के युगधर्म में मात्र नाम कमाने के लिये या प्रतिष्ठा या मान-सम्मान के लिये सभी करते है, लेकिन एक जमीन के छोटे टुकटे को छोडना होतो मरने जैसा हो जाता है। कहने के लिये त्याग, वैराग्य एवं सेवा के लिए वेश को धारण किये हुए से छोडानहीं जा सकता हो तो साधारण मनुष्य की क्या बात है। यही सबसे बडी बिडम्बना है। यह सभी तभी सम्भव है जब महापुस्त्रो द्वारा स्थापित आदर्श मार्ग का परित्याग करके मन, कल्पित उच्च मार्ग की परिकल्पना करके उसी पर चलने लगता है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए गीता में लिखा है - "परधर्मो भयावहः" पर धर्म अर्थात् दूसरे का धर्म, यही नही बल्कि एक दूसरे के आश्रम धर्म को या एक दूसरे के पद या अधिकार की अपेक्षा ही पर धर्म है, इसी बात को स्पष्ट करते हुए भगवान स्वामिनरायण ने शि.प. में लिखा है "स्ववर्णाश्रम धर्मो यः स हातव्यो न केनचित्। परधर्मोन चायर्यो" इसका मतलब यह कि वर्ण - ब्राह्य, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, आश्रम- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास इत्यादि वर्ण एवं आश्रम के विपरीत आचरण करना ही धर्म की मर्यादा का खंडन है। त्यागी के लिये गृहस्थाश्रम का आचरण, गृहस्थ के लिए त्यागी का आचरण पर धर्म है। आचार्य के लिए की गयी आज्ञा अन्य के लिए परधर्म है "प्रवर्तनीया सद्विद्या" यह धर्म वंशी आचार्य के लिए आज्ञा है, यदि दूसरा करता है तो उसके लिए वह पर धर्म है। यही भयावह है। कोई भय तत्काल नहीं भी आशकता लेकिन कालान्तर में उसका असर तो होता ही है। इस वाक्य का अतिक्रमण समाज के लिए भयावह है, इसे समझना आवश्यक है। अन्यथा धर्म की यथार्थ अज्ञानता ही उसका सर्वनाश करेगी।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

*- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

*जयश्री स्वामिनारायण*



## प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अप्रैल-२००७

१.-४. केरा (कच्च) में पदार्पण वहीं से मांडवी (कच्छ) पदार्पण ।

५. प.पू. बडे महाराजश्री का स्वयं प्राकट्योत्सव अपनी उपस्थितिमें सम्पन्न किये एवं अहमदाबाद मंदिर में नगीनभाई पटेल द्वारा आयोजित पारायण की पूर्णाहुति अपने हाथों से किये ।

७.-८. भक्तिनगर मानकुआ (कच्छ) में पदार्पण ।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज नूतन मंदिर की खातविधि प्रसंग पर पदार्पण ।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा में पुनः मूर्तिप्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. सूरत में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१४. श्री विपीनचन्द्र मनसुखभाई एवं संजयभाई मनसुखभाई झिन्झुवाडिया के यहाँ पदार्पण निर्णयनगर ।
श्री दिनेशभाई नाथाभाई भावसार के यहाँ पदार्पण, नारणपुरा ।

१७.-१९. बळदिया (कच्छ) पदार्पण ।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा में रजत जयंती पाटोत्सव पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोडा (इडरदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, वहाँ से आते समय श्री विनोदभाई धनजीभाई पटेल, श्री धर्मेन्द्रभाई घनश्यामभाई पटेल के यहाँ पदार्पण महादेवनगर ।

२२.-२३. रवापर (कच्छ) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२५. श्री घनश्यामभाई जयंतीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण - राजपथ क्लब के पास ।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर फिचोड (इडर देश) रजत जयंती तथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल में मूर्ति प्रतिष्ठा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

२८. श्री प्रकाशकुमार नटवरलाल ठक्कर के यहाँ पदार्पण वासणा ।
श्री नीतिनभाई रतीलाल ठक्कर के यहाँ पदार्पण सेटेलाईट ।
श्री कौशिकभाई सी. जोशी के यहाँ पदार्पण बोपल ।

२९. श्री महेन्द्रभाई के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

अधिक पुरुषोत्तम मास में श्री नरनारायणदेव का विशेष पाटोत्सव ता. १९-५-०७ अधिक ज्येष्ठ शुक्ल-३ के दिन धूमधाम से मनाया जायेगा । इसके साथ वर्ष में जितने उत्सव आते है वे सभी एकमहीने के भीतर मनाये जायेंगे । समस्त सत्संग समाज को एक महीने दर्शन का अवश्य लाभ लेना चाहिए ।

# प्रांतिज में नवलबहन और महाप्रभु का मिलाप

- डॉ. एच. वी. केराई (अंजार-कच्छ)

प्रांतिज शहर में स्वामिनारायण के सत्संगियों का अच्छा वर्चस्व था। विद्वान ब्राह्मण एवं वणिक संप्रदाय के चुस्त अनुयायी थी। प्रभु एक बार पंद्रह दिन के लिए प्रांतिज स्के । और सभी सत्संगियो के घर भोजन किये थे। सभी के प्रांगण में सभा करके धर्म का उपदेश दिये थे।

उस गाँव के केवल नवलबाई ही ऐसी थी जो भगवान के दर्शन का लाभ नही ले पायी । उनके पति सत्संग के विरोधी थे और जब तक स्वामिनारायण भगवान प्रांतिज में हो तब तक बहार का भोजन भी नहीं करने का क्योंकि वह स्वामिनारायण संप्रदाय का विरोधी था। "बाहर का खाना नही, बीडी पीनी नही, दारु, जुगार से दूर रहना, पर स्त्री गमन को पाप मानना ये सभी गुण संप्रदाय में थे इसीलिये स्वामिनारायण के संतो से दुश्मनी थी। नवलबाई को वह बहुत परेशान करता था। एकादशी का फलाहार करने नहीं देता, प्याज-लहसुन के टुकडे उसकी थाली में डालता, दारु, मदिरा मिलाता, देव-पूजा के सामग्री बहार फेंक देता, और माला तोड देता, नवलबाई को बार-बार चिढाता था।

नवलबाईने अपने निर्दई पति नारायण से श्रीजी महाराज के दर्शन के लिए प्रार्थना की । किन्तु वह दुष्ट माना नहीं। उसे समाचार मिला की उसकी पत्नी के भगवान प्रांतिज में पंद्रह दिन के आसपास स्कने वाले है तो उसने अपनी पत्नी पर पहरा रखकर खुद बाहर जाता तो बाहर ताला लगाकर जाता। और रात को नवलबाई को बंद करके सोता।

नवलबाई रोज कहती केवल पांच मिनट के लिए दर्शन करने दो । एक बार जाने दो फिर जीवनभर गुलामी करने का वचन देती फिर भी नारायण का हृदय पिघलता नहीं था।

एक दिन कुछ बहनो से जानकारी की कि दूसरे दिन महाराज अहमदाबाद जाने वाले है, दो दिन से भूखी-प्यासी बाई के मन में बहुत सारे संकल्प थे। भगवान खुद गांव पधारे है अगर दर्शन नहीं हुआ तो फिर कब मोका मिलेगा ? जीवनभर पछतावा रहेगा। उसने मनसे प्रभु को याद किया। घायल शेरनी की तरह खिडकी को धक्का मार कर तोड दी और महाराज जहाँ स्के थे वहाँ पहुंचकर दरवाजा खट खटाया।

पार्षदने दरवाजा खोला और रात्रि में आने का कारण पूछा ? श्रीजी महाराज के दर्शन की इच्छा बतायी। महाराज निद्रावश हो चुके थे। इस कारण दूसरे दिन आने को कहकर पार्षदने दरवाजा बंध किया। उसी समय बाईने दरवाजा पकड लिया और हरिदर्शन की हठ करने लगी। पार्षद से बहुत ही विंती की और कही कि बहुत कठिनाईयों से यहाँ तक पहुंची हूँ। प्रभु के दर्शन बगैर वापस नहीं जाऊँगी अपनी जान दे दूँगी। बाहर की बाते सुनकर प्रभु जग गये और बाहर आये। नवलबाई ? प्रभुने उनको नाम से बुलाया और शांत रहने को कहा। नवलबाई प्रभु के पाँव पडी।

जब खुब रोई तो सब ठीक हो जायेगा आशीर्वाद दे कर प्रसाद दिया और वापस जाने को बताया आगे के दरवाजे से घर में प्रवेश करना और पति से कैसे बात करना वहभी बताया।

रोज भोजन बनाते समय भगवान का नाम लेने को कहा जिससे उसके नास्तिक पति की बुद्धि ठिकाने आ जायेगी और पति को भोजन देने से पूर्व भगवान को भोग लगाना।

प्रभु दर्शन से तृप्त और आशीर्वाद से जब नवलबाई ने दरवाजा खटखटाया तब इतनी रात्रिको कौन घर पर आया यह देखने के लिए नारायणने आँखे खोली तो घरवाली को देखकर हैरान हो गया। उसे तो पीछे के रुम में बंद कर बहार सो रहा था। यहाँ कहाँ से आ गयी ? यह पूछताछ करे उससे पहले नवलबाई महाराजने जिस प्रकार शिखाया था उस प्रकार बात की "थोडी देर पूर्व पीछे घरकी खिडकी तोड कर दो चोर अंदर घूसे थे। और अपने घर के सारे गहने और रुपये चुराने का प्रयास किया मै कितनी आवाज लगायी फिर भी आप जागे नहीं। जिससे मैने स्वामिनारायण भगवान को याद किया और उन्होने मुझे बहुत ताकत दी और मैने दोनो चोरो को भगा दिया।"

नवलबाई की बात सुन चौका हुवा नारायण सत्य हकीकत देखने के लिए पीछे गया तो सचमुच खिडकी टूटी हुई थी। पत्नी की बात सच्ची मानी और इससे उसका कठोर मन पिघल गया कहा "सचमुच स्वामिनारायण भगवान ने हमारी रक्षा की है नहीं तो जीवनभर की जमापुंजी लुट जाती। मैं भी कैसा कठोर हूँ कि तुझे दर्शन के लिए जाने भी नहीं दिया। अब सुबह तूं भगवान को मिल आना और उनका आशीर्वाद भी

लेते आना ।

इस प्रकार नवलबाई का भाग्य बदल गया प्रभु को सारी बात की । प्रभु धीरे-धीरे हंसे और नवलबाई को आशीर्वाद देकर प्रसाद दिया और वह प्रसाद पति को देने को बताया ।

घर आकर बाईने पति को प्रसाद दीया और खुद रसोई के काम में लग गयी । प्रभु के कथन के अनुसार रोटी बनाते समय छाछ बनाते समय पानी छानते समय प्रभु का नाम लेने लगी और उसकी इन क्रियाओ से पति में बहुत परिवर्तन आया । और हंमेशा आग उगालने वाला नारायण ठंडा पड गया ।

उसे पत्नी के भोजन में सुंदर स्वाद मिला इस लिए बाहर का खाना छोड दिया उसकी पत्नी जब भी पूजा करे तो कोई परेशानी नही । उसने तो नवलबाई को भगवान से माला और पूजा लाने के लिए कहा, तब भगवान प्रांतिज से चले गये अभी अहमदाबाद में है, तो नारायणने अहमदाबाद जाने को कहा, तो नवलबाईने कहा "अगर आप साथ आयें तो ही जाऊँगी" तब थोडे दिन के बाद जाने के लिए तैयार हुआ, सारी खराब आदते उसने छोड दी, बीडी, जूआ, शराब सब उसने छोड दिया । उसके बोलने में बहुत फर्क आ गया था । गालिया देना भी बंद कर दिया । रोज समय से घर आ जाता था। नवलबाई के साथ शांति से बात करता । स्वामिनारायण भगवानने नवलबाई के जीवनमें खूब परिवर्तन लाया था । बाई शांति से भजन करती और शांति से भोजन करती । प्रभु ने एक ही दर्शन में उसकी पूरी किस्मत बदलदी । आसपास के पडोशी बी यहपरीवर्तन देख स्वामिनारायण भगवान की प्रशंसा करने लगे ।

थोडे समय बाद दोनो अहमदाबाद गये तब प्रभु से प्रभावित नारायण ने कंठी बंधाकर पंचवर्तमान पालने का नियम लिया । और एक समय का नास्तिक कुसंगी कठोर, व्यसनी नारायण स्वामिनारायण भगवान का निष्ठावान सत्संगी बन गया था । प्रांतिज में एक सज्जन इन्सान की तरह रहने लगा । भगवान की शरण में जाने से प्रारब्ध बदल जाता है ।

## करजीसण के गोविंदभाई

इस गाँव में प्रसिद्ध माताजी के मंदिर में हर अश्विन शुक्ल अष्टमी को बली चढाई जाती, प्रभु ने ग्रामजनो समाधि में यमयातना को दिखाकर यह प्रथा बंध करवाई ।

इस गाँव के गोविंदभाई के वंश में संतान नहीं थी जिससे उनकी भाभीने उनकी पत्नी को "बांझ" बोला । इससे उन्हे बुरा लगा और संसार में जी नही रहा .... गोविंदभाई और उनकी पत्नी त्यागी बनने गढडा मंदिर गये भी महाराजने उनकी आपबीती सुनी । महाराज को उन दोनो से सत्संग बढाना था इसलिए त्यागी बनने को ना बोला और संसार सुख का आशीर्वाद देकर संसार में वापस भेंज दिये ।

गोविंदभाई की पत्नी की उम्र अठ्ठावन वर्ष की थी किन्तु भगवान की कृपा से उन्हे चार पुत्र हुए और महाराजने चार बेटो के लिए आशीर्वाद दिया था ।

करजीसण में गोविंदभाई के परिवार ने स्वामिनारायण भगवान के हाथो कई उत्सव करवाये थे। सं. १८७१ में अति भव्य जन्माष्टमी का उत्सव किया था । महाराज कई दिनतक झूला झूले, गाँव में से सभी के अफीम छुडाये । जूआ बंद करवाया । शराब की भठ्टी बंद करदी । गोविंदभाई के परिवार से महाराजने इस गाँव में बहुत सत्संग फैलाया । इस प्रकार करजीसण स्वामिनारायण संप्रदाय का एक धाम बन गया ।

## अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिकमास ज्येष्ठ मास (पुरुषोत्तमास) का भव्यउत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में सं. २०६३ पवित्र अधिक ज्येष्ठ मास ( पुरुषोत्तममास ) में ता. १७-५-०७ से ता. १५-६-०७ तक एकमहीने तक उत्सव-भव्यता के साथ मनाने का शुभ आयोजन किया गया है । इस प्रसंग पर प्रतिदिन वार्षिक उत्सव के रूप में प्रसंग के अनुसार मनाया जायेगा, सभी सत्संगी दर्शन का लाभ लें इस हेतु से हम सभी सत्संगियों को आमंत्रण भेज रहे है ।

सुज्ञ आत्मीय प्रेमी भक्तजन ? यह पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास तीसरे वर्ष आता है इसलिये इस प्रसंग का यजमान बनने की महेच्छा सभी को होगी । इसलिये सबसे पहले कोठार में आकर अपना यजमान पद लिखवा कर घरका पता अवश्य लिखवायें । इस उत्सव में विविध सेवा का लाभ लेने हेतु अपने नाम को अवश्य लिखवायें ।

नोंट : ता. ११-६-०७ ज्येष्ठ कृष्ण ११ के दिन प्रातः ८-३० बजे सभा मंडप में प.पू. आचार्य महाराजश्री के सांनिध्य में समूह महापूजा का दिव्य लाभ मिलेगा । जिसमें भाग लेने हेतु कोठार में १२५-०० रूपये जमाकर रसीद प्राप्त करलें ।

# देव द्रव्य

- जयंतीभाई के. सोनी
(मेमनगर-अहमदाबाद)

"शिक्षापत्री स्वामिनारायण भगवान की वाङ्गमय मूर्ति है । यह श्रीजी महाराज की वाणी है और उनका स्वस्थ होने के कारण उसमे बहुत शक्ति है ।"

इसलिए शिक्षापत्री का पालन आदरपूर्वक करना चाहिए । महाराजने शिक्षापत्री के श्लोक नं. १४७ में प्रत्येक आश्रित को दान करने कीआज्ञा की है ।

"गृहस्थाश्रमी सत्संगी अपनी वृत्ति तथा उद्यम से प्राप्त धन-धान्य का दशवाँ भाग निकाल कर श्रीकृष्ण भगवान को अर्पण करें और जो व्यवहार से दुर्बल हो वे वीसवाँ भाग अर्पण करें ।"

सत्संगी मात्र के सुखके लिए ही धन्य-धान्य की शुद्धि के लिए यह आज्ञा की गयी है । सत्संगी को नीच कर्म करके धन कमाने की आज्ञा नहीं है, किन्तु अनजाने में गलत धन प्राप्त हुआ है उसकी शुद्धि के लिए तथा अपने सुख के लिए यह आज्ञा महाराज ने की है । जिसका पालन करना प्रथम धर्म है । आज्ञा में देव को अर्पण करने को कहा है । इसलिए देश विभाग के मुताबिक श्री नरनारायणदेव देश अर्थात् अहमदाबाद मंदिर तथा लक्ष्मीनारायणदेव अर्थात् वडताल मंदिर के अधीनस्थ मंदिर में दान देने की महाराज की आज्ञा है । इसीलिए जहाँ के आश्रित हो वही के मंदिर में दान देना । यह देव द्रव्य है । इसलिए प्रत्येक भक्तको अपनी उपज में से आज्ञानुसार जहाँ के आश्रित हो उस देव मंदिर में दान जमा कराना और महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करना । आज्ञानुसार दान न करने वाले या कम देने वाले पुनः जन्म लेकर देव द्रव्य ऋण से मुक्त होने के पश्चात ही धाम में स्थान प्राप्त करते है । इस लोक में गिने जाते कुछ अति बुद्धिशाली लोग मनगढंत काल्पनिक सिद्धांत प्रस्थापित करने के आश्रय से भोले भक्तों को गुमराह कर भगवान की स्पष्ट आज्ञा के बावजूद यह दान मंदिर में न देकर अपनी संस्था में दिलवाकर भगवान की आज्ञा का उल्लंघन करवाते है । उपर से आपका द्रव्य सत्कर्म में उपयोग हो रहा है । ऐसा कुछ आश्वासन देकर महाराज के गुनहगार बनाते है ।

जीवन के प्रत्येक कार्य में प्रभु में डुबे रहने वाले है । कर्मो में साथे रहने वाले को भी कुल में अधिकार है । यह सामान्य व्यवहार है । इस प्रकार हमारे हिस्से में भी भगवान का भी हिस्सा है । भगवान का हिस्सा उनकी चरण में चढाना भूल जाये तो दंभी मनुष्य भगवान को पसंद नहीं आता ।

प्रभु का हिस्सा जो मनुष्य पकवान बनाकर खाता है वह पापको ही भोजन में लेता है । ऐसे मनुष्य के यहाँ भोजन नहीं करना चाहिए । पहले जो लोग भगवान का हिस्सा खा गये उनका क्या हाल हुआ सब जानते है ।

भारतीय सस्कृति में कमाई संपत्ति मे राजा की चुंगी होती है । उस प्रकार प्रभु का हिस्सा भी होता है । मानवसंपत्ति का प्रवाह प्रभु कार्य में भगवान की आज्ञानुसार बहना चाहिए । प्रभु कार्य में उपयोग में ली गई संपत्ति के कारण मनुष्य हंमेशा खुश रहता है । सपंति केवल अपने भोग के लिए है ऐसा मानने वाले मनुष्य प्रसन्न न होतो वे दुःखी तथा रोगी बन जाते है ।

अपने मंदिर में रखे जाने वाले पैसे देवद्रव्य की निशानी है । सामान्य मनुष्य अपना छोटा सा हिस्सा मंदिर में प्रभु के चरणो में विश्वास पूर्वक रखते है । इस प्रकार समग्र देव द्रव्य का उपयोग प्रभुकार्य में होता है । इसप्रकार लोगों की श्रद्धा मंदिर के ट्रस्टियों में होती है । इसलिए ट्रस्टियो को खूब सावधानी रखने की जरुरत है । देव द्रव्य का उपयोग भगवत कार्यो में ही होना चाहिए । अपनी प्रसिद्धि चाहिए तो प्रभु का हिस्सा देने के बाद शेष संपत्ति में से सत्कार्य करना चाहिए । जिससे प्रभु की प्रशन्नता प्राप्त हो ।

श्रीजी महाराज के समय में महाराज के साथ हंमेशा रहनेवाले गराशीया नारुजीभाई थे । उन्हे महाराज जहाज में बैठा कर अक्षरधाम ले गये । वहाँ नारुजीको ऐसा बताया के पांचसो परमहंस तथा कुछ हरिभक्त की पंगत कर दिव्य भोजन करा रहे थे । तभी महाराज ने उन्हे कहा आप दादा खाचर और झीणाभाई के बीच बैठो । वह बैठ गये अब जब भी महाराज भोजन परोसते हुए नारुजी के पास पहुंचे तब परोसने वाली चीज खत्म हो जाती । नारुजी के पात्र मे कुछ भी नहीं था और महाराज ने भोजन की आज्ञा की । तब नारुजीने महाराज को कहा आपने मुझे भोजन के लिए बैठाया है किन्तु मेरे पात्र में आपने कुछ नहीं

दिया । यह सुन महाराजने कहा आप याद करो आपने अपनी संपति का उपयोग मेरे लिए किया था क्या ? लोभ के कारण अपने हाथों से दानकी कोई सेवा नही हुई है । यह तो कर्मभूमी है जो किया होगा वही मिलेगा ।

आपने हमारे साथ दूध-भात-शक्कर ही खाया है यह सुन नारुजीने श्रीजी महाराज को प्रार्थना की मुझ पर कृपा कर मेरे शरीर को पुनः जीवित कर दीजिये, जिससे आपके कथनानुसार आपके पुत्र ( आचार्य महाराज ) की सेवा कर प्रसन्नता प्राप्त कर शकूं । इतना कहते ही प्रभु ने उन्हे पुनः सजीवन कर दिया । संबंधी पूछने लगे जिस देह का त्याग कर दिया उसमें पुनः क्यो आये ? नारुजीने कहा मेरे ठीक होते ही आपको पता चलेगा इसलिए सब अपने-अपने घर जाओ । थोडे दिवस में उनकी तबीयत ठीक हो गयी । तब सोचा की जब श्रीजी महाराज थे तब मैने कोई सेवा नहीं की अब नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संत-पार्षदो को पदार्पण करा कर श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करु । यह सोच कर आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज तथा संतो को बुलाया और पंद्रह दिन तक विविध भोजन खिलाया तथा संत और महाराजश्री को प्रसन्न किया । पश्चात महाराजश्रीने अहमदाबाद जाने को कहा तब नारुजीने वस्त्रादि से पूजा कर भेट देकर आरती उतारी । फिर कहा आप श्रीजी महाराज के पुत्र हो तथा उनके स्थान पर विराजमान हो इसलिए महाराज से प्रार्थना करना कि मुजे थोडे समय में अक्षरधाम ले जाये । यह सुन पू. महाराजश्री बोले जो कमी रह गयी थी । उसे पूर्ण करने हेतुआपको अक्षरधाम से यहाँ भेजा था । इसलिए आज से पंद्रहवे दिन महाराज आपको अक्षरधाम ले जायेंगे । यह कह पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज अहमदाबाद वापस चले आये । पू. महाराजश्री के कथनानुसार ही देह का त्याग कर नारुभाई अक्षरनिवासी हुए । ऊपर के प्रसंग से साफ है कि देव द्रव्य आज्ञा के मुताबिक न दिया जाये तो पुनः जन्म लेकर आज्ञापूर्ण कर अक्षरधाम प्राप्त होता है । इसलिए समझदारी से दान देकर प्रभु की प्रशन्नता प्राप्त करनी चाहिए ।

# अनोरवातीर्थधाम गवाडा

- साधु रामकृष्णदास (कोटेश्वर गुरुकुल)

सर्वावतारी श्रीहरि पृथ्वी लोक पर पधारकर जिन-जिन स्थलों पर विचरण किये उन्हें अपने पुनीत चरणों से अक्षरधाम तुल्य बनादिये । जिन जिन वस्तुओं को श्रीहरिने स्पर्श किया या अपने उपयोग में लिया, वे जड वस्तुयें भी परम प्रसादीके स्म में दिव्य बन गयीं । श्रीजी महाराज सत्संग में अनेंको गाँव में फिरकर अनेकों लीलाये करके उस स्थान को श्रेष्ठ बनाया । उन्हीं अनेकों प्रसादीभूत तीर्थ स्थानों में एक तीर्थ स्थान गवाडा भी है । महाराज ने जो दिव्य लीला गवाडा मे की वह अलौकिक एवं अनोखी है ।

श्रीहरि उमाभाई पार्षद को साथ लेकर उत्तर गुजरात में विचरण करते हुए विसनगर होकर गवाडा आये । भगवान एवं भक्त जब गाँव में आये, उस समय उस गाँव में श्रीहरि का आश्रित कोई नहीं था । जिससे कोई पहचान नहीं शका । गायकवाड एवं अग्रेजी सरकार जिन श्रीहरि को हाथी पर बैठा कर उत्सव करती वही श्रीहरि भक्तों के कल्याणार्थ गाँव के एक वणिक शेठ की दुकान के सामने आकर भोजन एवं रात्रि निवास के व्यवस्था की बात की । परंतु शेठ भोजन के लिए असमर्थता व्यक्त की लेकिन रात्रि निवास के लिए अपनी दूकान के सामने की जगह में सोने की आज्ञा कर दी । अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति गवाडा गाँव में उस दुकान के सामने उमाभाई पार्षद के साथ रात्रि शयन किये । रात्रि में शेठने उमाभाई की तलवार एवं फेंटा ले लिया । प्रातः श्रीहरिने शेठ के पास जाकर उमाभाई की तलवार एवं फेंटा दिलवा दिया तथा वहाँ से आगे चल दिये । थोड़ा आगे जानेपर वाघरिया तालाब के किनारे महाराज बैठ गये । उमाभाई से भोजन के लिए कहे । उमाभाई वहाँ से बगल के गाँव वीजापुर बगीचा के यहाँ से भोजनलाकर महाराज को खिलाये ।

मात्र भक्तों के कल्याणर्थ ही श्रीहरि जिस स्थान पर सोये थे उस स्थान का महात्म्य अगणित बना दिये । उसी स्थान पर प.पू. बडे महाराजश्री एवं वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की इच्छा एवं संकल्प एवं आशीर्वाद से प्रसादी का नूतन मंदिर बनाया गया है । सत्संगी मात्र को इस दिव्यतीर्थ का दर्शन अवश्य करना चाहिए ।

# हम सभी का श्री स्वामिनारायण म्युझियम

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने संवत १८८२ कार्तिक शुक्ल एकादशी के पवित्र दिन अपने दो भतीजों को दत्तकपुत्र स्वीकार करके आचार्य पद पर आरूढ करके ऊद्धव संप्रदाय का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व देदिया था। दोनो स्थानों में से एक स्थान के आचार्य पद पर प.पू. आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वितीय स्थान पर श्री रघुवीरजी महाराजश्री के मस्तक पर लाल पगडी धारण करा कर श्रीहरि निवृत्त हो गयेथे। १८८२ फाल्गुन कृष्ण से १८८५ आश्विन शुक्ल द्वादशी तक श्रीहरिने जेतलपुर, धोलेरा, धोलका, जूनागढ, एवं गढां इन पांच मंदिरो का निर्माण कार्य कराकर अपने हाथों से स्वस्वरूप को प्रतिष्ठित किया था। इसी तरह १८८२ माघ शुक्ल पंचमी के दिन समग्र विश्व के आश्रितो को सुखी होने की अनमोल कुंजी "शिक्षापत्री" को भेंट की। सम्वत् १९९६ ज्येष्ठ शुक्ल-१० तक श्रीहरिने सत्संग में अविरत प्रत्यक्ष विचरण करके संत-हरिभक्तों को अनहद सुख दिये। इसके बाद सत्संग में दिव्य स्वरूप से एवं प्रत्यक्ष रूप में देव-आचार्य के स्वरूप में सभी को सुखिया कर रहे हैं।

बिलकुल इसी तरह अपने प.पू. बडेमहाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजीने सं. २०६० आश्विन शुक्ल-२ के दिन अपने औरसपुत्र प.पू. श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी को आचार्यपद सौंप कर समस्त सत्संग का अधिभार दे दिया। अहमदाबाद देश के श्री स्वामिनारायण सप्रदाय का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व श्रीहरि के अपर स्वरूप वर्तमान पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ग्रहण करके सत्संग अपार सुख प्रदान कर रहे हैं। परंतु बडे महाराजश्री भी श्रीहरि की तरह संत एवं हरिभक्तों के भावना के वशीभूत होकर निवृत्ति के बाद भी निवृत्त नहीं हो सके। श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण हेतु आज भी सत्संग में विचरण कर रहे हैं। उस समयजो भी चरण में भेट आती है उसे म्युझियम निर्माण कार्य हेतु भेंट कर देते हैं। श्री स्वामिनारायण म्युझियम की मालिकी श्री नरनारायणदेव की है। प.पू. बडे महाराजश्री का भगवान नरनारायणदेव के साथ ऐक्य हो गया है। इसीलिये वे आज इतना अथक परिश्रम कर रहे हैं। श्री स्वामिनारायण म्युझियम आज प.पू. बडे महाराजश्री का जीवन मंत्र बन गया है। इसलिये प्रायः छोटी-बडी सभा में बडे महाराजश्री म्युझियम की चर्चा अवश्य करते हैं। अपने ६३ वे जन्मदिन के प्रसंग पर उत्सव दरम्यान मंदिर के प्रसादीभूत सभा मंडप में इस प्रकार कहा -

विदेश में कोई युवान पुत्र अपने माता-पिता को कहता है कि आप Job करेंगे तो ही आप को साथ रखेंगे वृद्धावस्था में भी वृद्ध माता-पिता को Job न करे तो भी रखने की फर्ज पडती है। इसी प्रकार हमें भी कोई कहे कि आप हमारे घर पदार्पण करें तो ही आप को म्युझियम के लिये देंगे, यह नहीं चलेगा। हरिभक्तों को चाहिए की वे सामने से अनुदान भेंट देने आवें। कारण यह कि यह म्युझियम मात्र हमारा नहीं है। सत्संग का है। सम्पूर्ण सम्प्रदाय की है। फिर भी म्युझियम के लिए कोई पदार्पण करने को कहे तो मैं ना नहीं कर सकता। इसी कारण पुनः विदेश जाना है। इस प्रकार करने से सत्संग में जागृति रहेगी। इसके साथ उस धन से म्युझियम का कार्य तीव्रगति से चलता रहेगा। हम चाहते हैं कि इस काम के लिये नरनारायणदेव की फिक्स डिपोझीट न तोडनी पडे। प्रत्येक मंदिरो में मैंने म्युझियम का साईन बोर्ड लगाया है। वह इसलिये नहीं लगाया है कि लोग मेरा फोटो देंखें। परंतु हरिभक्तों को सतत यह याद रहे कि म्युझियम का कार्य करना है। हरिभक्त वहाँआवे, कार्य देंखे, जिससे मेरा उत्साह बढे। यह म्युझियम कोई सामान्य म्युझियम नहीं है अन्तर राष्ट्रिय स्तर पर खूब महत्व का म्युझियम बनेगा। प्रसादी की वस्तु तो संतो के पास, हरिभक्तों के पास एवं मंदिरो में तो आप लोग देखते हीं हैं। यहाँ अक्षरभुवन में भी बहुत सारी प्रसादी की वस्तुएँ हैं। परंतु म्युझियम में इन वस्तुओं को रखा जायेगा कि दर्शनार्थी के चित्त में वह बस्तु सदा के लिये घर करजायेगी।

महंगाई बढती जा रही है। इसलिये म्युझियम निर्माण कार्य में जितना विलम्ब होगा उतना अपना बजट बढता जायेगा। थोडे समय पहले एक बैंक कर्मचारी

हरिभक्त अच्छी खाशी रकम लेकर म्युझियम पर आया । उन्होंने कहा कि मैं अपने पी.एफ. के खाते में से म्युझियम के लिये लोन लिया हूँ । मैंने उनसे कहा कि किसी का इस प्रकार पैसा लेकर म्युझियम नहीं बनाना है । आप इस पैसे को वापस लेजाइये आप अपने घर में परिवार के लिये उपयोग में लीजिएगा । उन्होंने कहा हमें यह पैसा वापस नहीं लेजाना है । लोन तों मैं दो वर्ष में भरदूंगा । इस प्रकार उन भक्त की भावना देखकर धन स्वीकार कर लिया । इस प्रकार की भक्तों में भावना होती है ।

प.पू. वर्तमान महाराजश्रीने भी मौन स्म से कहा कि हमारे पू. बापूजी की बात में हमारा सुर आ गया है । इसलिये यथार्थस्म से प.पू. महाराजश्रीने भी उपरोक्त म्युझियम की बात हम सुभी को पुनः कह सुनाया ऐसा कहा जा शकता है । कारण यह कि नरनारायणदेव के जैसा वाक्य है । "हैं तो एक लेकिन दिखाई दो देते हैं ।" दोनो का सुर एक होने से सत्संग के सभी कार्यों की अपेक्षा म्युझियम निर्माण कार्य प्रथम स्थान पर हो गया है ।

श्रीहरि एवं प.पू. धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा देश विदेश में नूतन निर्मित असंख्य मंदिरो में श्रीहरि मूर्ति के स्वस्म में प्रत्यक्ष दर्शन दे रहे हैं । परंतु म्युझियम ऐसा विशिष्ट मंदिर है कि जहाँ एक ही जगह पर एक साथ में प्रसादी भूत असंख्य वस्तुओं का दर्शन होगा इस कार्य को देश विभाग का नियम लागू नहीं पडता है । कारण यह कि इष्टदेव का यह कार्य है । पत्ते पत्ते पर श्री स्वामिनारायण मंत्र को गुंजित होने में यह म्युझियम सहायक बनेगा । श्रीकृष्ण भगवान कानी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को धारण किये थे तो ग्वालबाल भी कहीं कम नहीं थे । वे भी अपनी लकडी का टेका देकरअपनी भावना व्यक्त किये थे । इसी प्रकार प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. महाराजश्रीने म्युझियम निर्माण के लिये दृढ संकल्प किया है । जिस कार्य को पूर्ण करने के लिए निरन्तर प्रवृत्त रहते हैं । इसलिये इस कार्य को पूर्ण करने के लिए तन, मन, धन से हमें भी सहकार देना चाहिए । श्रीहरि एवं श्रीहरि के अपर स्वस्म की प्रसन्नता मिलेगी । इस कार्य में बहुत सारे हरिभक्तों ने खूब सहयोग किया है । परंतु म्युझियम अभी भी ३०% प्रतिशत तैयार हो सका । कारण यह कि कार्य बहुत बडा है । जब तक यह कार्य पूर्ण न हो तब तक सभी भक्तजन बडेमहाराजश्री का तन, मन, धन से सहयोग करें । जिससे ग्वालबालों की उक्ति हमारे ऊपर भी चरितार्थ हो सके । प्रतिदिन कुछ दान रखने के लिए अहमदाबाद मंदिर से "श्री स्वामिनारायण म्युझियम सेवा कुंभ" को घर लाकर रख सकते हैं । उस कुंभ को पूर्ण भरजाने पर मंदिर में लाकर जमाकरके रसीद ले लेनी चाहिए ।

इस लेख से अलग थोड़ा लिख रहा हूँ । प.पू. बडे महाराजश्री योगीपुस्म है । पृथ्वी ऊपर कबतक शरीर रखना है वे इस विषय में स्वतंत्र है । एक बार वे एक सभा में कहे किअक्षरधाम में जाने के लिये हमारी फाइल रख दी गयी है । श्रीहरि को मिलने का हमे आनंद है । परंतु श्री नरनारायणदेव के १८५ वें पाटोत्सव की सभा में प.पू. बडे महाराजश्री आनंद में आकर सत्संग पर न्यौछावर हो गये । स्वयं प्रसादी की सभा मंडप में कुरशी पर विराजमान थे । उनके दोनो तरफ अहमदाबाद एवं वडताल गादी के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री विराजमान थे । उसी समय जैसे भविष्य का दर्शन कर रहे हों इस प्रकार पूज्य बडे महाराजश्री अपने आशीर्वचन में बताया कि - "अब श्री नरनारायणदेव की स्थापना के २०० वर्ष में १५ वर्ष बाकी है । उस समय द्विशताब्दी पाटोत्सव जब मनाया जाय तो सम्पूर्ण गुजरात ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत एवं विश्व के लोग इस पाटोत्सव में भाग लेकर अपने जीवन को धन्य बनायें एवं लोग आनंद से झूम उठे, इसके साथ हम नरनारायणदेव को प्रार्थना करते हैं कि उस समय पाटोत्सव की सभा में इसी सभा मंडप में यही दोनो आचार्य महाराजश्री दर्शन दे रहे हों और हम इन दोनो के बीच में बैठे हो, दूसरी बात यह कि इस सभा मंडप की सीढी उस समय भी हम विना कीसी आधार के चढ सकें ।

६३ वें प्राकट्योत्सव की इस सभा में बडे संतोने बडे महाराजश्री की इस उक्ति को सत्य होने की शुभेच्छा व्यक्त की । महाराज को जब उन्होंने प्रार्थना की उस समय प्रथम वाक्य यहा था कि - "संतो का आशीर्वाद हमें फलता हैं कारण यह कि थोडे दिन पूर्व शरीर का निदान करवाया था तो उसमें कोई तकलीफ नहीं थी अर्थात् डाक्टरी रिपोट में सभी अवयव स्वस्थ थे ।

स्वयं योगी पुस्म होते हुए भी शरीर की स्वस्थता का यश संतो को देते हैं । श्रीजी महाराज की यह अद्‌भुत परम्परा का अनोखा दर्शन ही है ।

# पूज्य बडे महाराजश्री तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री की अपने आश्रितो पर पूर्ण कृपा

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

किसी भी सम्प्रदाय में धर्मधुरा का संचालन करनेवाले को सर्वोच्च माना जाता है । समाज में उस स्थान का महत्व आध्यात्मिक दृष्टि से भी उन्नत है। आज अपने इस मूल सम्प्रदाय के सर्वोच्च स्थान पर विराजमान श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति पूज्य बडे महाराजश्री एवं आचार्य महाराजश्री के आध्यात्मिकता एवं नीति मत्ता की सुवास पूरे जगत में फैली हुई है ।

इतने उच्च स्थान पर विराजमान होतेहुए भी किसी भी आगन्तुक को सम्मान देना, उसकी वात को ध्यान पूर्वक सुनना, उसे यथोचित मार्ग दर्शन देना, इत्यादि क्रियाओं में पूज्य बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की विनम्रता का दर्शन हुए विना रहता नहीं है । कच्छ में भीषण भूकंप के समय भूकंप पीडितों के दु:ख को देखकर कंपित हो गये थे, परिणाम स्वस्म सहायता के लिए आश्वासन देकर नये जीवन जीने की दिशा भी बताये थे । उसके बाद आज तक सहायता का कार्य चालू ही है ।

कच्छ के उत्सव में महाराजश्री यदा कदा पधारते रहते हैं । ऐसे प्रसंग पर बडे महाराजश्री भुज पधारे थे, भूकंप बाद मंदिर का नया निर्माण कार्य चालू होने से रहने की व्यवस्था आंख के डॉ. दिल्लीवाले के यहाँ थी । मेरा बेटा राजेश मेरे साथ था । हम महाराजश्री के दर्शनार्थ गये थे । राजेश अपनी तबियत के विषय में बताया कि हमें हरदम कब्जियत रहती है । पूज्य बडे महाराजश्री ने योगासन करने के लिये कहा । महाराजश्री ने कहा अभी मैं भोजन कर लिया हूँ अन्यथा आपको आसन करके बताता । बडे महाराजश्री की ऐसी सुन्दर भावना हमें स्पर्श कर गई । भक्तों की कोई भी समस्या हो अचूक समाधान कर देते हैं ।

थोडे समय पूर्व पूज्या माताजी के अक्षरधाम जाने के बाद मैने एक पत्र लिखा था । उस के बाद मैं कालूपुर महाराजश्री की आफिस में मिलने गया, दर्शन कर ही रहा था कि तब तक महाराजश्रीने कहा "आपका पत्र मिला था ।" इस प्रकार देश विदेश से कितने पत्र आयें होंगे उन सभी में एक-एक का ध्यान रखना कितना कठिन है - जिसका हमें अनुभव हुआ है ।

पूज्य बडे महाराजश्री हमें फोन किये और कहे किआपका मेरे मोबाईल में मिस कोल आया था, इस लिये आपको फोन कर रहा हूँ । रात्रि का ९-०० बज रहा था । मैने कहा "महाराजश्री" मोबाईल इसलिये किया कि आप संत भक्तों के साथ मानसरोवर की कठिन यात्रा करके आये हैं । यह यात्रा आपही कर शकते है । इस यत्रा के सन्दर्भ में आप एक पुस्तक लिखिये जिसे पढकर सभी हरिभक्त आपको याद कर सकें । महाराजश्रीने कहा अब मैं भूतकाल हो गया हूँ । मैने नम्रता पूर्वक कहा महाराजश्री आपतो श्रीजी महाराज के अपर स्वस्म हैं । आपका स्वस्म सदा वर्तमान काल में रहता है । आप सभी वर्तमान काल में रहने की प्रेरणा भी दे रहे हैं । आप म्युझियम की अनेक विधियों में प्रवृत हैं । लेकिन भक्तों की तरफ से हमार नम्र निवेदन है किइस पर आप अवश्य ध्यान देंगे । महाराजश्री ने हंसते हुए उत्तर दिया कि "हम अवश्य विचार करेंगे ।"

विचार आया कि इतनी अधिक प्रवृत्ति में हमारे मोबाईल के मिस कोल को पढ़कर सामने से फोन करते हो तो यह कितनी बडी महानता कही जायेगी ? कितने वर्षो से मेरे जन्म दिन पर आशीर्वाद के लिए पत्र भेंजता हूँ । जिसका ख्याल करके सामने से स्वयं फोन करते हैं ।

किसी कारण से पूज्य आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी के दर्शनार्थ मैं गया । मुझे ऐसा ख्याल था कि महाराजश्री मेरे तीनो पुत्रों को पहचानतेनहीं होंगे । दंडवत प्रणाम कर

*अनुसंधान पृष्ठ नंबर १२*

# श्री सत्शास्त्र व्यसनाय नमः

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

शतानंदमुनि रचित थी श्रीहरि के १०८ नाम युक्त चमत्कारी श्री जनमंगल स्तोत्र में श्री सहजानंद स्वामी महाप्रभु को सत्शास्त्र व्यसनः का वर्णन किया गया है । जनमंगल नामावलि में तो श्रीहरि का बावनवाँ नाम श्रीसत्शास्त्र व्यसनाय नमः है । अर्थात्, "वेदादिक आठ सत् शास्त्रोका श्रवण करने का उन्हे व्यसन हो ऐसे श्रीहरि को मैं प्रणाम करता हूँ ।"

श्री सहजानंद स्वामी का समग्र अवतार चरित्र अद्भुत और अलौकिक है । प्रथम उन्होंने स्वयं ही आचरण किया है और उसके बाद ही उन्होंने बोध दिया है ।

पाँच वर्ष के श्रीहरिकृष्ण को पिता धर्मदेव ने जिस दिन से अक्षर लिखाने का प्रारंभ किया उसी दिन से ही कुशाग्र बुद्धिवाले हरिकृष्ण बहुत कम समय में सभी वर्णो और अंको को शीख गये थे । सभी ग्रंथो को पढ़ने लगे थे । धर्मपिता के द्वारा उन्होंने श्रीमद् भागवत, महाभारत, सात खंडोवाला स्कंद पुराण, तथा धर्मशास्त्रस्म अष्टादश स्मृति का श्रवण किया इतना ही नहीं उहोंने उसका मनन और निदिध्यासन भी किया ।

श्रीहरिने उसके बाद अपनी बुद्धि से उनका सार-सार ग्रहण किया । श्रीमद् भागवत में से पंचम और दशम स्कंध पुराण में से श्रीवासुदेव माहात्म्य महाभारत में से श्रीमद् भगवत् गीता विदुरनीति और विष्णु सहस्त्रनाम तथा धर्मशास्त्र मेंउत्तम सारस्मी याज्ञवल्क्यऋषि की स्मृति को अपनी बुद्धि से सार-समझ कर लिखा । फिर इन चार सारो को भिन्न भिन्न लिखकर पिता धर्मदेव को बताया । गहन शास्त्रों में से इतनी सुंदर और सचोट सूचि को देखकर धर्मपिता, बहुत ही प्रभावित हुए । उन्होंने पुत्र को उपदेश दिया कि, हे धनश्याम ! आज से प्रतिदिन कृष्णपूजा करना इन सारतत्वो को कथाके स्म में सभी को सुनाना ।

श्रीहरि उसी समय से स्पष्ट अक्षर में लिखकर एक गुटका बनाये जिसेअपने पास रखे । इन चार सार के गुटके को शास्त्रका "फ्लोपी" कहा जा सकता है । इन्हीं सारों में से "शिक्षापत्री" एवं वचनामृत की हमें अद्भुत प्राप्ति हुई ।

पिता धर्मदेव की आज्ञा मस्तक पर चढ़ाकर धनश्याम महाराजने कथा का नित्य पाठ करने का नियम बना लिया । जब जब विचरण करते हो तब प्रागजी पुराणी को सदैव संग रखते थे । चलते-चलते भी कथा का अचूक श्रवण करते । इस अर्थ में प्रागजी पुराणी श्रीहरि के मोबाईल कथाकार थे ।

शास्त्र के वचन के विषय में श्रीहरि को अड़िग श्रद्धा थी इसीलिए आश्रितजनो को भी उसी प्रकार अनुसरण क रने की सलाह देतें थे ।

"जिसे भगवान का निश्चय होता है वह शास्त्र के द्वारा ही होता है । शास्त्र द्वारा प्राप्त निश्चय ही यथार्थ - अचल निश्चय है । जिसे शास्त्र की प्रतीति होती है वह किसी भी संजोग में भगवान से विमुख नहीं हो सकता । इसीलिए परमेश्वर विमुख नहीं होते । शास्त्रों में भगवान के अनंत चरित्रों का वर्णन है । इस कारण परमेश्वर के समस्त चरित्र शास्त्र से बाहर हो ही नहीं सकते । इसीलिए जिसे शास्त्र के वचनो में विश्वास हो उसे ही भगवान के स्वस्म का ज्ञान होता है । और धर्म से भी वह किसी भी संजोग में विमुख नहीं होता । ( सारंगपुर-१३ )

इस प्रकार शास्त्र तो भगवान के स्वस्म को समजने का, उत्तम माध्यम है । परंतु किस प्रकार के शास्त्र पढ़ने चाहिए और श्रवण करने चाहिए ।

इस कारण से श्रीहरिने "मन चंगातो कठौती में गंगा" जगत कोमिथ्या साबित करते हुए कहा कि "धर्म में रहना तथा भगवान के स्वस्म की उपासना करनी चाहिए तथा भगवान के अवतार चरित्र का श्रवण-कीर्तन करना चाहिए । तथा भगवान के नाम का स्मरण करना चाहिए । इस कारण से ग्रंथ का श्रवण करना चाहिए ।" मुक्तानंद स्वामी आदिक के जो काव्य, कीर्तन हैं उनका गान करना चाहिए और श्रवण करना चाहिए तथा भगवान के अवतार चरित्र से युक्त काव्य-कीर्तन का गान करना चाहिए परंतु कबीर और अखा के जो काव्य, कीर्तन उनका श्रवण या गान नहीं करना चाहिए । अगर मैं आपको

इधर-उधर की बाते समझाकर गलत राह दिखाऊँ तो ऐसा होगा जैसे की कूएँ में सभी को डालकर ऊपर से शिला से ढ़क देने जैसी बात होगी । और उन लोगो के बाहर निकलने की कोई उम्मीद नहीं होगी । आप लोग मेरे वचनो पर विश्वास करके किसी गलत राह पर चल पडे तो उस में मेरा क्या भला होगा ? इस कारण यह कथा आपके कल्याण हेतु है ऐसी दृढता बनी रहे इस कारण हमने आप सब को सुनाया । ( ग.म. ३५ ) किस शास्त्र का वांचन-पठन-श्रवण करना चाहिए । इसकी भी स्पष्टता श्रीहरिने किया है ।

शास्त्रों का यथार्थज्ञान देकर श्रीहरि "सम्प्रदाय की पुष्टि" की बात भी किये हैं । श्रीजी महाराजने प्रश्न किया की जितने आचार्य हुए है उनके सम्प्रदाय की पुष्टि बहुत काल तक किस उपाय से रहती है । बाद में इसका उत्तर समझाते हुए कहते है कि - सम्प्रदाय के जो इष्टदेव पृथिवी पर जिस हेतु से जन्म धारण किये हो, जो जो चरित्र किये हो, उसका स्मरण करने से थोडा भी अपने जीवन में आचरण आजाय, इष्टदेव की महिमा समझ में आजाय, इसके साथ जन्म से लेकर शरीर छोड़ने तक सभी चरित्र जिस शास्त्र में वर्णिन होउससे सम्प्रदाय की पुष्टि होती है । वह शास्त्र में वर्णित हो उससे सम्प्रदाय की पुष्टि होती है । वह शास्त्र संस्कृत में हो या भाषा में हो, वही शास्त्र सम्प्रदाय की पुष्टि करता है । इसके अलांवा उस सम्प्रदाय की पुष्टि जिस शास्त्र मेंहो उसी को मानना दूसरे शास्त्र को नहीं मानना यही हमारी आज्ञा है । ( ग.म. ५८ )

अपने सम्प्रदाय से सम्बन्धित जो शास्त्र जैसे शिक्षापत्री - वचनामृत ये सभी श्रीहरि की वाणी स्म शास्त्र है । सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, भक्तचिंतामणी, निष्कुलानंद काव्य, श्रीहरि चरित्रामृत सागर, अक्षरानंद स्वामी की बातें, ब्रह्मानदं काव्य, प्रेमानंद काव्य, श्रीहरि दिग्विजय, इत्यादि श्रीहरि के लीलाचरित्रों का गान करने वाला शास्त्र है ।

सर्वोपरि श्रीरि की वाणी तथा शास्त्रों की विशेषता यह है कि वे सरल एवं समृद्ध हैं । जिसका श्रवण-मनन निदिध्यासन करते रहें तो सहजानंद स्वामी की महिमा बडी सरलता से हृदय में उतरने लगेगी । श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने मुख से मुक्तानंद स्वामी को कहा कि "परम शांति का सर्वोत्तम उपाय हमारे चरित्रों वाले शास्त्र हैं । श्रीहरि के अवतारों वाले इस चरित्र शास्त्र का यही यथार्थ रहस्य है ।

"ए रसना चाखणहार ।
छास ते नव पीवे रे लोल ॥"

---

*अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०*

## पूज्य बडे महाराजश्री तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री की अपने आश्रितो पर पूर्ण कृपा

ही रहे थे कि महाराजश्रीने कहा "रखो" ऐसा कहकर मुझसे महाराजश्रीने कहा कि सूर्यकांतभाई आज आप अपने तीनो बेटों के साथ आये हैं । यह सुनकर मुझे बडा आनंद हुआ, बाद में सत्संग विषयक बहुत सारी बातें करते रहे ।

मैंने कहा अहमदाबाद से कच्छ की सफर काफी लम्बी है । रास्ताभी अच्छा नहीं है । आप तो अनेंको बार कच्छ के गाँवो में एवं शहर में पधारे हैं, सभी को दर्शन का लाभ मिलता है । लेकिन आपको थाक तो अवश्य लगती होगी या विमारी भी हो जाती होगी ।

पूज्य आचार्य महाराजश्रीने कहा "देखिये हमें बिमार होना उचित नहीं, आसनो द्वारा स्वस्थ रहना आवश्यक है, जिससे तकलीफ से दूर रहा जा सकता है । प्रत्येक गमना गमन में तकलीफ हो या बिमार हो जाय जिस कारण कार्यक्रम में भाग न ले सके तो जिन भक्तों में हमारे प्रति अटूट श्रद्धा है उन्हे कैसा लगेगा ? महाराजश्री की ऐसी वाणी सुनकर इस वाक्य में ही महाराज का दर्शन हो गया ।

इ.स. १९६७ में पूज्य ध्यानी स्वामी श्रीहरिस्वरूपदासजी भुज में बडे महाराजश्री का दर्शन करने गये । उस शुभ प्रसंग की आज भी याद आती है । उसके बाद पूज्य महाराजश्री को किस सम्बोधन द्वारा पत्र लिखना चाहिए यह समझाया था । अपने "श्री स्वामिनारायण मासिक" में लेख भेंजने के लिये आजीवन सभ्यों के नाम का रजिस्ट्रेशन करने के लिए पूज्य ध्यानी स्वामी के पुरुषार्थ की प्रशंसा करने वाला पत्र बडे महाराजश्री की आज भी याद दिलाता रहता है ।

# सत्संग सुरभि :

## "हम सत्संग किये है, चोरी नहीं किये है"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

गाँव सुंदरियाणा में हिमराज शाह नामक एक वणिक रहता था । उनके तीन बेटे थे । बनाशा, पूजाशा, जेठाशा । तीनों बेटों में, भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रति खूब आस्था थी । लेकिन हिमराज शेठ महाराज को नहीं मानता था।

एकबार उनका बडे बेटे बनाशा ने कहा, भगवान स्वामिनारायण दर्शन करने योग्य है । तुरत कहा मैं कोई स्वामिनारायण को नहीं जानता । नहीं जानते इसीलिए तो कहता हूँ कि एकबार तो मिलिये । लेकिन हिमराज शेठ ने बेटे की बात अनसुनी कर दी । शेट वैद्य कर्म में भी होशियार थे । नाड़ी देखकर रोग बताते थे । उसी के अनुकूल दवा भी देते थे ।

इसी समय एकबार गोपालानन्द स्वामी सुन्दरियाणा गाँव में पधारे । उनकी तबियत बिगड गयी ।

वनाशा आकर पिताजी से कहा, पिताजी गोपालानंद स्वामी की तबियत ठीक नहीं है । आप उनकी नाड़ी देखलीजिए न ? रोगी को देखने के लिए वैद्य ना नहीं कर सकता ।

हिमराज शाह गोपालानंद स्वामी की चिकित्सा करने गये । नाडी देखने हेतु उन्होंने गोपालानंद स्वामी का हाथ पकडा, परंतु नाड़ी मिलही नहीं रही थी । पाँव में और गले में भी जाँच की । परंतु नाडी मिलती ही नहीं थी । हिमराज शेठने स्वामी के सामने देखा तो स्वामी मुस्कुरा रहे है । पुनः शेठ नाडी देखने का प्रयत्न किये फिर भी नाड़ी नहीं मिली । उन्होंने रहस्य समझ लिया ये कोई साधारण पुरुष नहीं है, कोई योगी पुरुष है । उनके मन में हो गया कि जब शिष्य ऐसे तो गुरु कैसे होंगे । उनका दर्शन करना है ।

ऐसा संकल्प करके हिमराज महाराज का दर्शन करने गये । हिमराज महाराज का दर्शन करते ही समर्पित हो गये । तुरंत ही महाराज को दंडवत् प्रणाम करने लगे । महाराज से नीति नियम को ग्रहण किये और सत्संगी हो गये । बाद में सम्पूर्ण परिवार महाराज का सेवक हो गया ।

इनकी ज्ञाति वालों को यह अच्छा नहीं लगा । वे सभी शेठ को नाना प्रकार से सताने लगे । परंतु हिमराज हो हिमालय की तरह अडिग रहे । बेटे भी बाप से सवाये थे । किसी का कोई प्रभाव पडा नहीं ।

इस प्रकार कितने वर्ष बीत गये । इसी बीच हिमराज धाम में चले गये । अंतिम क्रिया का प्रसंग आया । अब उनकी ज्ञाति वाले हिमराज के बेटों से कहा "स्वामिनारायण की कंठी तोड डाले तो ही अंतिम क्रिया भोजनादिक में भाग लेंगे ।

तीनो बेटे दृढता पूर्वक कहे आप सभी को आना हैं तो ठीक, अन्यथा मच्छरों की डर से कोई अपना महल नहीं छोडता ?

यह सुनकर ज्ञातिवाले बहुत नाराज हुए । लेकिन हिमराज के बेटों की सत्संग के प्रति दृढता वे सभी जानते थे । किसी भी प्रकार उन सभी को वे लोग डिगाकर अपनी नाक ऊँची रखना चाहते थे । इसलिये ज्ञाति वालों ने कहा तुम सभी ऐसा करो जब तक तुम्हारे पिता का काम है तब तक कंठी निकाल दो बाद में पहन लेना । यह तो सम्भव नहीं मात्र धर्म का मजाक कहा जा सकता है । तो ऐसा करो जब तक ज्ञाति वाले भोजन करें तब तक तुम तीनों भाई घर में छिपे रहो तीनो भाईयों ने ऐसा करने के लिये स्पष्ट इन्कार कर दिया । हम सत्संग किये हैं, हम कोई चोरी नहीं किये हैं । ज्ञातिवाले खूब गरम हो गये । वे सभी गाँव-गाँव में पत्र लिखकर भेंज दिये कि हिमराज के घर जो भोजन करने जागेया वह ज्ञाति बाहर समझा जायेगा ।

हिमराज के तीनों बेटों ने बडी दृढता से कहा जिसे ज्ञाति में रहना हो वह रहे, हम तो स्वामिनारायण की कंठी बांधे है तो बाप से सवाया रहेंगे । सभी परिवार के लोगो ने विचार करके महाराज को पत्र लिखा कि महाराज ! आप हमारे ऊपर कृपा करके सुंरादियाळा पधारे । हमारे पिताजी को शांति मिलेगी, केवल आए ही मेरे पिताजी के निमित्त भोजन करेंगे तो उन्हें आनंद होगा ।

महाराज हिमराज के परिवार की लाज रखदी, वे किसी की परवाह किये बिना चल दिये क्योंकि तीनों भाइयों ने सत्संग की शान रखी यह जानकर उन्हे बहुत आनंद हुआ । महाराज केसाथ संत-हरिभक्त जब सुंदरियाणा पहुंचे तो तीनों

*अनुसंधान पृष्ठ नंबर १५*

सत्संग बालपाठिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

## सम्पत्ति को लात मारने वाला संत बन शकता है

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

ब्रह्म रसके भोगी, वही रसता जब स्वाद के पीछे दौडने लगता है । चींटी की तरह जैसे चींटी नाना विध विघ्नों को दूर करते हुए गुणतक पहुंच जाती है ठीक यही स्थिति अपनी एवं अपने जीभ की हैं । हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सारे अन्तराय कोदूर करते हूए सतत गतिशील रहते हैं । भूख-प्यास, ठन्ठी-गर्मी, इत्यादी की परवाह किये विना हम गति करते है, प्रश्न यह कि हमारी गति सही दिशा में हे या नहीं ? चलते चलते जहाँ अंधकार आया वहीं विश्रांति की दृष्टि से आश्रम में गया और रातवास किया, वह मठाधीश गृहस्थ था । पहले के जमाने में राजा महाराजा जब प्रसन्न होते तो मठ - मंदिर - आश्रम के लिये जगह दे देते थे ।

इस मठका स्वामी कोई गृहस्थ था । वह गाँव का मालिक भी था । संयोगवश भ्रमण करते हुए महंतजी रात्रि निवास इसी आश्रममें किये । मठाधीश के मन में हुआ कि मेरी जवान लडकी इस सुन्दर वर के साथ ब्याहने योग्य है । यह विचार कर उस आगन्तुक से कहा कि क्यों इधर-उधर भटकते हो । मैं मठाधीश हूँ । इस गांव का मालिक हूँ । यह मेरी बेटी योग्य उम्र की हो गयी है, यदि आप हाँ करो तो मैं अन्यत्र दूसरे बर को ढूंढने नहीं जाऊँ । यह सब आपका है । यह सुनकर महंत विचार करने लगा कि इतनी बडी समस्या कहाँ से आगयी । उसने कहा नहीं हम विवाह नहीं कर शकते । सुनते ही मठाधीशने कहा यदि मेरी बात नहीं मानोगे तो जबरदस्ती हम अपनी बेटी के साथ विवाह कर देंगे । ना क्यो कर रहे हो ? इतने में मठाधीश ने घंटी बजाई और सेवक हाजिर हो गया । मठाधीश ने कहा इस महंत को लेजाकर बन्द करदो । वैसा ही किया गया । रात्रि का समय आया, सभी सो गये, महंत जागता रहा चौकीदार से कहा अरे भाई ? मुझे तुम छोड देते तो अच्छा होता । चौकीदारने कहा, मै छोड दू तो नौकरी एवं मृत्यु दोनो मेरा निश्चित है । अतः छोड नहीं सकता । महंतने कहा मुझे भागने की उपाय बताओ । चौकीदार ने कहा जिसमें आपको बन्द किया गया है उसी के पीछे शौचालय है, उसकी खिडकी एकदम सडी है, एक धक्कामारने पर गिरजायेगी, आप वही से भाग जाना, आप का कार्य भी हो जायेगा और मैं सलामत रहूँगा ।

महंतजी पीछे की तरफ गयेजैसा चौकीदार बताया था वैसा करने मेंउन्हें सफलता मिल गयी । वहां से वे भाग निकले ।

घूमते-घूमते स्वामिनारायण भगवान कहाँ है यह पूछते हुए गुजरात में आये । जहाँ - महाराज विचरण कर रहे थे वही पहुंच गये । महाराज को देखते ही आनंद से गद्‌गद् हो गये । महाराज के चरणों में गिर कर आनन्द की अश्रुधारा से महाराज के चरणों को धोने लगे । श्रीजी महाराज भरी सभा में ये कौनहै, सभी को बताया की ये असाधारण है, माया से पार होकर आये है ।

"माया सबसे बडी धुतारी" इस माया को कोई जीत नहीं शकता । किसी न किसी बहाने माया आती है और धर दबोचती है ।

"तपसी को तेजी दूर न जावे ।
क्रोध स्म रहे भेली ।"

जब कोई तपस्वी तप करता है तब क्रोध स्म में उसके पास आती है । जब कि ये महंत जी सत्ता, संपत्ति को लात मारकर यहाँ आये हैं । रास्ते में भी बहुत सारे विघ्न आये लेकिन सारे विघ्नो को दूर करते यहाँ आये है । बाद में महाराज उन्हे अपने पास रखे एवं दीक्षा देकर उनका नाम गोविन्दानंद रखे । इस के बाद उन्हें जेतलपुर में आनंदानंद स्वामी के पास रहने की आज्ञा की, क्योंकि दोनोंअयोध्या की तरफ से आये थे, दोनोको अनुकुल रहेगा । गोविन्दानंद स्वामी जेतलपुर के आसपास के गाँव में सत्संग का खूब प्रचार किया ।

दीपक को देखकर उस पर टूट पडने वाला छोटा सा जीव कहाँ ? गाँव की सत्ता-संपत्ति इत्यादि का वैभव छोड कर चल देनेवाले महानआत्मा कहा ।

इसी लिए मुक्तानंद स्वामीने कीर्तन में गाया है कि -

"जी रे महिमा मोटो छे महंत नो,
जेने सेवे रे छूटे माया नुं जाल ।
प्रीति बधे पर ब्रह्ममां
मुक्तानंद कहे रे, तजी आल पंचाग... संत ॥

ऐसे महान विभूति महात्माओं के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

•

## मृत्यु स्वीकारना सरल नहीं है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

जगत स्वार्थी है। जब कभी दुःख आता है तब सभी साथ छोड देते हैं। संत दृष्टांत देते है। एक वृद्ध दंपती थे। उन्हे भगवान की कृपा से एक संतान थी। पुत्र युवान हो गया। वृद्ध माता के लिए बेटा छडी के स्म में था। बेटा खूब संस्कारी था। लेकिन समय बदलता गया। एकबार ऐसा हुआ कि वृद्ध माता का बेटा बिमार पड गया। खूब दवा हुई लेकीन ठीक नहीं हुआ। धीरे-धीरे एक वर्ष बीत गया। माता को ख्याल आया कि अब मेरा बेटा बचेगा नहीं। अब जल्दी मरजाय तो ही ठीक क्योंकि अब किसी काम लायक नहीं रहा।

वृद्ध माता कथा में सुनी थी कि यमराज जब आते है तब भैंसे पर बैठकर आते है। हमारे बेटे को भी भैंसे पर बैठकर लेने आयेगे। जब तक बेटा सेवा किया तब तक अच्छा लगा। अब वृद्धा माता के लिए वह बेटा भार स्म लगने लगा। वह प्रतिदिन भगवान से प्रार्थना करती कि हे प्रभु अब जल्दी मेरे बेटे को बुला लीजिए। एकबार ऐसी धटना बनी कि माताजी बाहर दालान में खाट पर सोईथी, बेटा भीतर सोया था, उसी समय बगल वाले की भैंस खूंटे से छूट गई और वृद्ध माता की चारपाई में आकर सींग रगडने लगी। खाट हिलने से वृद्धा माता की आंख खुली तो कहने लगी, अरे यमराज ! मैं अभी पूर्ण स्वस्थ हूँ, विमार तो मेरा बेटा है, उसे लेजाइए।

कहने का मतलब आप समझ गये होगें, कि यह संसार कितना स्वार्थी है उसे अपना ही दिखाई देता है - विषम परिस्थिति में जब स्वार्थ टूट जाता है तब कोई कोई का नहीं होता। स.गु. देवानंद स्वामी ने लिखा है कि -

मात पिता सुतनारी,
स्वार्थी आ संसारी भारी।
अंतकाले उठी जावे रे,
मरवाने टाणे ॥

परंतु इस रहस्य को संसार का जीव समझ नहीं शकता। कारण यह कि संत समागम उसे नहीं मिलता। संत समागम बिना यह ज्ञान नहीं मिलता।

देवानंद कहे सुखधारी,
भज्यानहीं गिरधारी।
संत विना कोण समझावे रे,
मरवाने टाणे।
सगा कोई साथे नावे रे,
मरवाने टाणे।

जीव का सच्चा अपना तो मात्र भगवान हीं है। जो जन्म से मरण तक जीव को आत्मीयता छोडता नहीं है।

"संत सगा हरिजन सगा,
अंत समय में राम।
तुलसी ये संसार में,
तीन ठरन के ठाम ॥

यदि जीव यथार्थ स्म से भगवान की शरणागति स्वीकार करता है तो भगवान उसके सबसे नजदीक के होजाते है। उस जीव को अहं-ममता से छुडा देते हैं।

श्रीजी महाराज गढडा अंत्य के ३९ वें वचनामृत में सभी परमहंस एवं सभी सत्संगियो के सामने वात की है कि "भगवान की माया क्या है" तो देह के विषय में अहं बुद्धि। इसी माया से दूर रहना चाहिए। इस माया को जो पहचान लिया और भगवान में प्रीति कर लिया तो माया से पार हो जाता है। यही शास्त्र का सिद्धान्त है। इस ाबात को आज समझिये या बाद में समझना तो पडेगा ही। हनुमान नारद, प्रहलाद, जितने भी भगवान के भक्त हुए है वे भी भगवान के पास यही मांगे हैं कि हे प्रभु ? अहं स्मी जो माया है उससे हमारी रक्षा की जियेगा। इसके साथ आप में अधिक अधिक प्रीति बढती जाय।

•

पृष्ठ १३ से आगे..... **सत्संग सुरभि :**

भाईयों के आनंद का पार नहीं रहा। वे फिर से नई रसोई बनवाये और भोग महाराज का लगाकर संत हरिभक्तों को भोजन कराये।

सम्पूर्ण वणिक् ज्ञाति यह दृश्य देखकर आश्चर्य चकित रह गयी। महाराज का दिव्य स्वस्म देखकर तथा संत हरिभक्तों का समाज देखकर ज्ञाति के लोग नाना प्रकार की चर्चा आपस में करने लगे। महाराज आग्रहपूर्वक संतो को रसोई परोस रहे थे। वहाँ पर महाराज एक दिन नहीं बल्कि पांच दिन तक स्के रहे। हिमराज के बेटे महाराज की कस्गा र्दता देखकर खूब भावुक बन गये। महाराज आज हमारे ज्ञाति के बनकर हमारी लाज रखे। महाराज ! जोआपका बनकर रहे उसे आप दुःख नहीं आने देते।

इस प्रकार हिमराज के बेटों ने पिता की परंपार को कायम रखी। ज्ञाति से बाहर होना पसंद किये लेकिन कंठी उतारना पसंद नही किये, शिक्षापत्री के वचन का पालन किये।

हमारी आज्ञा है कि सत्संगी कंठ में दोलर की कंठी अवश्य धारण करें। दुःख आने पर भी वे सभी कंठी नही उतारे, कारण यह कि उन सभी ने सत्संग किया था। इसमें कोई कमी नहीं थी।

# ।। भक्तिसुधा ।।

## एकादशी को रात्रि जागरण सभा

- सां.यो. मंजूबा भारतीबा गुरु सां.यो. गोदावरीबा (हवेली) अहमदाबाद

पूज्या गादीवालाजी की हवेली में पूज्या गादीवालाकी आज्ञा से प्रति एकादशी के दिन बहनों की सभा दोपहर में २ बजे से ४ बजे तक चलती है। जिसे चैत्र शुक्ल एकादशी को एक वर्ष पूर्ण होने से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवाला की आज्ञा से तथा उन्हीं के मार्ग-दर्शन में एकादशी की रात्रि में १० बजे से प्रात ४ बजे तक भव्यातिभव्य सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें अहमदाबाद के प्रत्येक विस्तार से जैसे नारायणघाट, नारायणपुरा, राणीप, जीवराजपार्क, मेमनगर, वाडज, महादेवनगर, मेघाणीनगर, बापूनगर इत्यादि स्थलों से महिला मंडल आकर रात्रि जागरण किया था। इस सभा में सांख्ययोगी बहनों ने कथा, धुनि, कीर्तन एवं रासगरबा किया था।

इस सभा का आनंद जोमिला वह भूतो न भविष्यति वाला था। जैसे लग रहा था कि उस रात्रि में शरद ऋतु का चन्द्रमां खिल उठा हो। इस आनंद का लाभ लेने के लिये करीब ६०० बहने उपस्थित थीं। सम्पूर्ण रात्रि सभी एकटक आनन्द को निरखने में बितादीं। उन सभी के मनमें केवल एक मात्र गोपियों की तरह कृष्ण की रास में जैसे एकरात्रि ६ महीने में बीत गयी अर्थात् ६ महीने बीत गये उन्हें एक रात्रि जैसे लगा था। आज यहाँ भी सभी बहनों में यही भाव था कि प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवाला रात्रि में ११ बजे से प्रात ४ बजे तक इस दिव्य सभामें विराजमान थीं। वह दिव्य स्वरूप मानो लक्ष्मीजी साक्षात् सोलहों श्रृंगार करके सभी को दर्शन देने हेतु पधारी हों ऐसा लग रहा था। उनके भीतर से ऐसा दिव्य प्रकाश फैल रहा था जैसे रात्रि के अंधकार को दूर करके स्वयं हीरा चमक रहा हो। सभी बहनों के अंतर में प्रकाश फैल गया। जब गादीवाला आशीर्वाद देने के लिये दो शब्द बोंली तो सभी को आनंद की शीतलता जैसे चन्द्र को देखकर चकोर प्राप्त करता है वैसे ही बहनो ने भी आनंद लूटा। पूज्या गादीवाला के मुख से निकलती मीठी बोली सभी को आनंद एवं उल्लास से तरबोर कर रही थी।

प.पूज्या गादीवालाश्रीने कहा आप सभी को खूब-खूब धन्यवाद, आप सभी यहाँ सम्पूर्ण रात्रि प्रभु के ध्यान भक्ति में बिताई। जिस प्रकार मानव सुबह से साम तक काम धंधा करने जाता हो पर लौटते समय उसके मन में होता है कि जल्दी घर पहुंच जाऊँ। इसी प्रकार प्रभु इस पृथ्वी लोक में हम सभी को भेजे हैं। इसलिये ख्याल रखना कि हमें भी भगवान के पास जाना है। वहाँ पहुँचने के लिये मात्र भजन भक्ति ही साधन है। आप सभी जिस प्रकार यहाँ आये हैं और भजन भक्ति में रात्र जागरण किये है तो हम आप सभी के साथ दिन में भी जागने के लिये तैयार हैं।

आप सभी इस सत्संग सभामें पधारिये। हम सभी श्री नरनारायणदेव के आश्रित हैं। यथार्थ सत्संग ही हमारा धर्म है। इस हेतु सभी लोग दृढ निष्ठा रखकर सत्संग में इसी प्रकार लाभ लेते रहिए। प्रत्येक एकादशी के दिन सभा में पधारिये। हमारी सदैव यही इच्छा है कि सत्संग का दिन प्रतिदिन अधिकतम विस्तार हो। आज के दिन श्री नरनारायदेव के चरणों में प्रार्थना यह कि आप सभी को श्री नरनारायणदेव सत्संग एवं भक्ति का बल दें, आप सभी को सुखिया करें। इस प्रकार पूज्या गादीवाला हार्दिक आशीर्वाद दी थीं। ऐसा भावात्मक आशीर्वाद सुनकर सभी मंत्र मुग्ध हो गयी थी।

•

## पूज्या गादीवालाजी

- लक्ष्मीबहन

अपनी हवेली में एकादशी की सभा बंध थी फिर भी अंतिम एक वर्ष से परम पूज्य धर्मधुरंधर आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और हमारे प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से सभा चालू की है। २९-४-०७ के दिन एकादशी की सभा को एक वर्ष पूर्ण हुए हैं। उस दिन गादीवालाश्रीने हवेली में रात्र में ११ बजे से लेकर प्रात ४ बजे तक जागरण करवाया था और स्वंय भी उसमें उपस्थित थी। और सभी सत्संगी बहनो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि,

"हमें सत्संग में जागृति लाने की जरूरत है। उसके लिए सभी सत्संगी बहनो का साथ और सहकार की आवश्यकता है। मुझें आप लोग कहें उतनी रात्रि जागरण करने के लिए तैयार हूँ।

जब पू. गादीवाला इतनी मेहनत करती हैं तो हमारी फरज भी यही है कि

उनको अपने तन, मन, धन से साथ प्रदान करें।

वास्तव में हम धन्यभागी है कि हमें ऐसी गादीवालाश्री गुरुके स्वस्म में प्राप्त हुई हैं। हमें एक घर की जिम्मेवारी भारी पडती है। परंतु गादीवालाश्री तो पू. लालजी महाराजश्री, पू. श्रीराजा और घर की जिम्मेवारी के साथ सत्संग की जिम्मेदारी भी तन, मन से निभाती है।

हवेली में जब भी दर्शन के लिए जाते हैं तो सभी बहनो को हसते हुए ही मिलती है। और कोई भी ऊँमरलायक बहन चरण स्पर्श करती है तो स्वयं ही बहन का हाथ पकडकर उन्हें चरण स्पर्श करने से मना करती है। ऐसी हम सभी की गादीवाला सौम्य और निर्मानी-निराभिमानी जैसे गुण की भंडार हैं।

मैं कई वर्षो से मंदिर आती हूँ। अभी मैं जब गादीवालाश्री से मिली तब मुझे अत्यधिक संतुष्टि हुई थी और हंमेशा होती ही रहेगी। मैंने उनसे पूछा की आप को कोई छोटी गादीवाला कहता है तो आप को बुरा नहीं लगता ? तब वे हसते हुए बोली, कि, "नाम-धन और बडप्पन ये सब हमारे साथ नही जायेगा महत्व की चीज है केवल निर्मानी स्वभाव। हम अहंकार से जितने ही दूर रहेंगे उनते ही भगवान के समीप रह पाएँगे। ईश्वर से श्रेष्ठ बड़ा कोई भी नही है। कोई उनसे महान हो भी नही शकता।"

ऐसा निर्मानी स्वभाव मैने कही भी नहीं देखा है। श्री नरनारायणदेव के चरणो में यही प्रार्थना है कि पू. गादीवालाश्री सत्संग को ऐसा अलौकिक सुख अहर्निश प्रदान करती रहे। क्योंकि मुझे दृढ विश्वास है कि वे सत्संग की और संप्रदाय की बहुत ही प्रगति करेंगी।

•

## शिर साटे नटवर

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

लाधी बहन कच्छ भुज की हरिभक्ता बाई, मूल वे रामानंद स्वामी की शिष्या थी। महाराज एक बार भुज पधारे तब लाधीबहन को मिलने की इच्छा व्यक्त की। लाधीबहनने कहा कि, "मैं तो रामानंद स्वामी की शिष्या हूँ और उनको मन में रखती हुँ और इस कारण से किसी और को मिलने की आवश्यकता मुझे नहीं हैं।"

महाराजने कहवाया कि : "आप रामानंद स्वामी की शिष्या और हम उनके शिष्य हैं। और इस प्रकार आप के गुरुभाई भी हुए।" लाधी बाई को प्रतीत हुआ कि, "सहजानदं स्वामी मेरे गुरुभाई तो है ही।" इस प्रकार वे महाराज को मिलने आयी। महाराज सुंदरजी के घर विराजमान थे। महाराजने उनका स्वागत करते हुए कहा कि : "पधारिये लाधीबाई।" और अपने इस गुरुभाई के प्रथम दर्शन मात्र से ही लाधीबाई का चित महाराज के प्रति भक्तिभाव से भर गया।

घर वापस लौटने के बाद बस स्वामी सहजानंद की मधुर मूर्ति अंतर में से हटती ही नहीं थी। इस प्रकार कितने ही दिन व्यतीत हो गये।

फिर एकबार लाधीबाई ने महाराज को आमंत्रण दिया : "भाई आज हमारे घर भोजन करने पधारिये।" महाराजने कहा, "हम तो रोटी और मिर्ची गुड़का भोजन करेंगे।" लाधीबाईने कहा, "ठीक है महाराज।"

महाराज लाधीबाई के घर भोजन करने पधारे। लाधीबाईने पहले तो रोटी और मिर्ची-गुड़ का भोजन दिया। फिर अंदर जाकर हलवा-पुड़ी का भोजन लेकर आयी। और रोटी-मिर्ची लेकर चली गयी। महाराज को अति स्नेह से कहने लगी, "यह आप की बहन का घर है यह आप कैसे भूल गये ? क्या मैं अपने घर में पहलीबार पधारे हुए भाई को रोटी-मिर्ची का भोजन करवाऊँगी ?"

महाराज बाई का भगिनी स्नेह देखकर अति प्रसन्न हुए। और प्रेम से हलवा-पूड़ी का भोजन करने लगे।

लाधीबाई महाराज सन्मुख हाथ जोडकर बैठ गई "भाई" के सामने देखती ही रहीं। देखते ही देखते उनको समाधि हो गयी। ओ हो हो हो ? कितना दिव्य है यह लोक। अद्‌भुत तेज। दिव्य सिंहासन पर भगवान बिराजमान हैं। "अरे यह तो "भाई" बडे बडे देव उनकी सभा में उपस्थित थे। अद्‌भुत था उनका ऐश्वर्य सिंहासन पर बिराजमान और मेरे घरमें भोजन करने वाले दोनो व्यक्ति एक ही हैं।"

लाधीबाई समाधि में से जागी, उनकी आँखे खुल गई। तब महाराजने हसकर कहा : "हलवा और लायीए।"

लाधीबाई के पाँव में अब और भी साहस आ गया। वे प्रसन्नतापूर्वक महाराज को हलवा परोसने लगी। "अब मैं आप को पहचान गयी हूँ। अब मैं आप की आज्ञा का कभीभी अस्वीकार्य नहीं करुंगी।"

और कुछ ही समय में उनकी परीक्षा की क्षण भी आ पहुँची।

एकबार महाराजने लाधीबाई से कहा : "लाधीबाई हमारी आज्ञा मानेगी ?"

लाधीबाईने कहा : "नतमस्तक होकर शिर पर चढाकर मानूंगी।"

महाराजने कहा : "मस्तक से भी

प्रतिष्ठा बडी है।''

लाधीबाईने कहा तो ''प्रतिष्ठा के लिए आज्ञा का पालन करुंगी।''

महाराजने कहा, ''तो फिर शिंगार करके, लाल रंग की साडी पहनकर बाजार में से पानी का धड़ाभर कर ले आओ।''

लाधीबाई विधवा थी विधवा होकर शिंगार करना अनुचित था। लाल रंग पहनने की मनाई थी। और इस प्रकार तो बाजार में जाने से सिर्फ बदनामी ही होगी। परंतु लाधीबाई के मन में किसी भी प्रकार के खटराग केबिना महाराज की आज्ञा के पालन हेतु हाथ में चुडी, मस्तक पर कुमकुम का टीका लगाकर, लाल रंग की चुनर ओढकर माथे पर तांबे का घडा रखकर कीर्तन गाते गाते पानी भरने हेतु चलने लगी.

किसीने कहा, ''लाधीबहन पागल हो गयी है? तो कुछ लोग उनका मजाक उडाने लगे। लाधी किससे विवाह कर लिया है?'' लाधी ने लोगों की बिलकुर परवाह न करते हुए कहा ''पुरुषोत्तम नारायण से।''

घडा भर कर लाधीबाई महाराज के पास गयी। महाराजने प्रसन्न होकर आशीर्वाद प्रदान किया।

महाराज को तो ऐसे शूरवीर हरिभक्त ही अधिक पसंद थे। और उन्होंने ऐसे शूरवीर हरिभक्तों की सेना खड़ी की थी। यह एक प्रकार का युद्ध ही था। देखादेखी में इस युद्ध में नहीं पडनाचाहिए। कटकर गिरने की जिसकी तैयारी हो वही इस में उतर सकता है। लाधीबाई शूरवीर हरिभक्ता थी।

मस्तक सहित नटवर को भजने हेतु समाज की परवाह नही की तो नटवर भी ऐसे हरिवर लाधीबाई के ही होकर रह गये।

•

## शुष्कवेदांत

- दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी

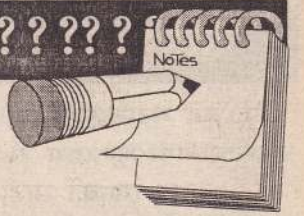
संवत १८७८ के मागशर वद चौदश के दिन स्वामीश्री सहजानंदजी महाराजश्री गढ़डा मध्य में दादा खाचर के दरबार में सभा में दिखाई पड रहे थे। तब उनको उदास देखकर प्रश्न हुआ कि श्रीजी महाराज उदास क्यों है? महाराज की उदासी का कारण शुष्कवेंदांत शास्त्र का श्रवण था। शुष्कवेदान्त के वचनो को सुनने वाले की बुद्धि भ्रष्टहो जाती है। महाराजने सोचा की श्रवण करने से अंतर में उद्वेग उत्पन्न हो जाता है। शास्त्र का श्रवण करने मात्र से भगवान की उपासना का खंडन हो जाता है। और अंतर में समभाव व्याप्त हो जाता है। और अन्य देव की भी उपासना हो जाती है।

शुष्कवेदान्त का अर्थ है ब्रह्मतेज जीवस्म के बराबर है। जिस प्रकार सूर्य का प्रतिबिंब है। उसी प्रकार ब्रह्मस्म का प्रतिबिंद जीव है। जब यह ज्ञात हो जाये कि मैं ब्रह्मस्म हूँ तब और कुछ साध्य करने की आवश्यकता ही नहीं है। स्वयं निर्गुण मार्गको प्राप्त हो गये हैं ऐसी अनुभूति होती है। परंतु जीव को जन्म-मरण होता है। उसी प्रकार ब्रह्म को जीव के समान माना जाये तो ब्रह्म कोभी जन्म मरण चक्र होता है। परंतु वास्तव में तो ब्रह्म को जन्म-मरण का चक्र होता ही नहीं है। हम स्वयं को ब्रह्मस्म मानगें तो भी जन्म मरण का चक्र नहीं टलेगा। इस कारण जीव धीरे-धीरे अहंकारी हो जायेगा। और ऐसे लोग स्वयं का ही मोक्ष बिगाडते है। और उनकी संग करनेवाले का भी मोक्ष बिगाडते हैं। भगवानने १६ वचनामृत में ऐसे लोगो की बात की है। जो स्वयं को ही भगवान मानते हैं। स्वयं को ज्ञानी समझते हैं। और उनके सामने नारद सनकादि आदि स्वयं को भगवान के सेवक समझते हैं। भगवान का ध्यान कीर्तन करते हैं। ज्ञानी तो वे हैं ही परंतु स्वयं को शुष्कवेदान्त सुनकर ब्रह्म को नहीं समझते परंतु स्वयं को ही ब्रह्म मानने लगते हैं। और ज्ञान की चोटी पर पहुँचने के बावजूद समभाव से भगवानका कीर्तन, ध्यान करते हैं। उन्हे भगवान के विषय में संशय नहीं होता।

उदाहरण : शुकदेवजीने रास पंचा ध्यायी का वर्णन किया तब भगवान ने पर स्त्री का संग क्यों किया? इस विषय में राजा परिक्षित को संशय हुआ। परंतु शुकजी को लेशमात्र संशय नहीं हुआ। जो शास्त्रवेता होता है वही भगवान के भक्त का महात्म्य समझता है। इस प्रकार मनुष्य को आत्मशक्ति प्राप्त करने हेतु प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य को भगवान के स्वस्म में अत्यंत विश्वास होना चाहिए। भगवान सभी के स्वामी हैं। भक्तवत्सल है। पतितपावन हैं। अधमउद्धारण है।

प्रत्येक मनुष्य मे ऐसा विश्वास उत्पन्न करने हेतु श्रीजी महाराजने नित्य प्रयत्न किया। उसका परिणाम यह है कि आज हम सभी में यह विश्वास उत्पन्न हुआ है कि नारायण ही मेरे स्वामी है। मै ब्रह्म नहीं परंतु में ब्रहम का अंश ही हूँ। इसीलिए मेरी निष्ठा भी पतिव्रता स्त्री जैसी अव्यभिचारिणी होनी चाहिए। जिस प्रकार रुक्मिणी को कृष्ण के प्रति निःसंशय प्रेम था उस प्रकार हमें भी स्वामिनारायण भगवान के प्रति निःसंशय प्रेम उत्पन्न करना चाहिए।

# ?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????




*साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी*

*(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)*

प्रश्न : १ किसका संमान करना चाहिए ? शिक्षापत्री के किस श्लोक में लिखा है ?

प्रश्न : २ पर्वतभाई को खेत का बाडा बनाते समय कुल्हाडी छटक गयी और पैर का जूता कट गया लेकिन पैर बच गया पर्वतभाई ने विचार किया कि आज महाराज मेरी रक्षा नहीं किये होते तो एक महीने तक खाट पर सोना पड़ता । इसके लिये पर्वतभाई ने क्या निश्चय किया ?

प्रश्न : ३ चार प्रकार की वृत्तियों के नाम लिखे ?

प्रश्न : ४ श्रीजी महाराज जिसे "च्यवन ऋषि" कहकर बुलाते थे उनके पूर्वाश्रम का गाँव झालावाड राणपुरा ( चूडा ) था, उन पूज्य स.गु. स्वामी का क्या नाम था ?

प्रश्न : ५ श्रावण वदी आठम बुधवारी, नक्षत्र रोहिणी आयो रे, इस कीर्तन के रचयिता कौन थे ?

प्रश्न : ६ यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भष्मसात् कुरुते तथा ॥ यह श्लोक भगवत् गीता के किस अध्याय का है ?

प्रश्न : ७ बाल शर्मा धर्म-भक्ति को शिक्षा दे रहे थे, उसमें कल्याणी को ऋतुकाल आदिक धर्म का पालन करने का नियम बताया जो ऋतुकाल सोलह रात्रि का है - इस में कितनी रात्रि त्याग करने की बात कही है ?

अप्रैल २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) श्रीजी महाराजने ग.म.प्र. ५० वें वचनामृत में कहा है । जिसका सार-अपने कल्याण के लिए सावधानी पूर्वक जो वर्तन करता है वह कुशाग्रबुद्धिवाला है, इसके विना सभी मूर्ख है, इस प्रकार कुशाग्र बुद्धिका लक्षण बताया है । (२) जेतलपुर के जीवराम विप्र थे। चौथे दिन "मुतल" नामक कूए में गिरकर मृत्यु होने वाली थी । (३) मेघपुर में रामानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी को । (४) अहमदाबाद से सिद्धा में पाचं हजार द्रोण गेहूँ, गुण पांच सो द्रोण, दाल पांचसौ द्रोण, इसके साथ नमक, खटाई, मसाला, चना, आदि सामग्री लाकर एकत्रित किया ता । (५) भक्त चिंतामणि प्रकरण-५२-५३ में । (६) १. जीव हिंसा शरीर या वचन से भी नहीं करनी चाहिए । २. परस्त्री का संग नहीं करना । ३. कभी मांस नही खाना । ४. दवा के स्प में भी मदिरापान नहीं करना । ५. विधवा स्त्री का स्पर्श नहीं करना । ६. तीर्थ में भी आत्मघात नहीं करना । ७. धर्म कार्य के लीए भी चौरी नहीं करना । ८. किसी कोमिथ्या कलंक नहीं लगाना । ९. किसी देव की निंदा नहीं करना । १०. जिसकाअपने अनुकूल न हो उसका भोजन नहीं करना । ११. विमुख के मुख से कथावार्ता नहीं सुनना । (७) प्रेमानंद स्वामी

१. पटेल माणेकबहन शिल्पाहन मणीलाल - दहेगाम
२. सोनी भगवानदास वेलजीभाई - मोरबी
३. मेघाबहन कमलेशभाई पटेल - कुहा
४. अरविंदाबहन भावसार - चांदलोडिया
५. वीणाबहेन आर. भावसार - चांदलोडिया
६. हरिनंदनदासजी पुजारी शिकागो - यु.एस.ए.
७. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलालवाला
८. शारदाबहन कांति पटेल - नांदोल
९. साकर बहन नटवरभाई पटेल - नांदोल
१०. पटेल कैलासबहन विष्णुभाई - नांदोल
११. पटेल अंजनाबहन मनुभाई - नांदोल

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. "भक्तिसुधा" श्री स्वामिनारायण मासिक में समाविष्ट हुई है । जिस कारण भक्तिसुधा लेख लिखने वाली बहने श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के पते पर लेख लिखकर भेंजे ।

# सत्संग समाचार

## प.पू. बडे महाराजश्री का ६३ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानके ६ठे धर्मवंशज श्री नरनारायणदेव पीठ के निवृत्त प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ६३ वाँ प्राकट्योत्सव चैत्र कृष्ण तृतीया ता. ५-४-०७ के शुभ दिन सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाया गया ।

सर्व प्रथम विद्वानो द्वारा मंगलाचरण करके वेद विधि से पूजन किया गया, इसके बाद पूज्य संतो एवं हरिभक्तोने आरती उतारी थी । आज श्री नगीनभाई पटेल ( कुं डलवाला ) परिवार द्वारा आयोजित कथा की पूर्णाहुति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से हुई थी । यजमान परिवार ने प.पूज्य दोनो आचार्योका पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । पू. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने कथा के वक्तापद पर सात दिन तक कथामृत का रसपान कराया । महंत स्वामीने सभा संचालन करते हुए धर्मवंशी आचार्य महाराज का माहात्म्य सुंदर ढंग से समझाया था । संप्रदाय के मूर्धन्य पंडित सुप्रसिद्ध कथाकार पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, पू. ध्यानी स्वामी, पू. पी.पी. स्वामी, शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, कांकरिया महंत स्वामी, मूली के महंत स्वामी, नारायणपुरा के महंत स्वामी, आदि अनेक मंदिरों के विद्वान संत अपनी शुभेच्छा व्यक्त किये थे ।

अंत में पूज्य बडे महाराजश्री ने खूब प्रसन्न होकर समस्त सभा को आशीर्वाद देते हुए सर्व प्रथम पारायण के यजमान श्री नगीनभाई के पुत्र श्री दीपकभाई का स्वास्थ्य अच्छा हो जाय, ऐसा श्रीहरि के ६ठे वंशज आज के मंगल प्रसंग पर आशीर्वाद के रूप में दिया । यह कोई छोटी बात नहीं है । भगवान के अपर स्वरूप के सिवाय यह बात कौन कह सकता है । जो हजारों भक्तों की सभा में इस प्रकार का वचन कह सकता है तो निश्चित ही इस पृथ्वी पर दिव्य पुरुष के रूप में अपने भक्तों को आंच न आवे इस प्रकार आशीर्वाद दिया ।

प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री का दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" का निर्माण कार्य सभी भक्तों के सहयोग से हो रहा है, आगे और भी सहयोग मिल सके इसलिए सभी संतो से एवं महंतो से अनुरोध किये थे । जिस में कितने ही संतो की प्रेरणा से हरिभक्तों की सेवा हुई है, यह वात महंत स्वामीने स्पष्ट की ।

*- को. स्वा. सत्यप्रकाशदासजी*

## अहमदाबाद मंदिर के रंगमहल एव हवेली में श्री घनश्याम महाराज एवं गणपतिजी-हनुमानजी की पुनः प्रतिष्ठा आरती

सर्वोपरि श्रीजी महाराज ने स्वयं अपनी बाहों में अपने स्वरूप श्री नरनारायणदेव के साथ महाराजने यह परंपरा बनाई कि जहाँ भी संप्रदाय का मंदिर या हरि मंदिर हो वहाँ विघ्न विनायक गणेशजी एवं हनुमानजी महाराज को अवश्य प्रतिष्ठित किया जाय । जिसका शुभारंभ अहमदाबाद मंदिर में स्वयं अपने कुलदेव श्री हनुमानजी महाराज एवं गणपतिजी महाराज की स्थापना की थी । श्री नरनारायणदेव के दर्शन से पूर्व देवाधिदेव गणपतिजी एवं श्री हनुमानजी महाराज एवं इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के ध्येय स्वरूप श्री घनश्याम महाराज प्रसादी के रंग महल में काष्ठ की अलौकिक प्रतिमा, इसी तरह हवेली में बहनों के ध्यानार्थ दिव्य अलौकिक प्रतिमा की प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजके वरद् हाथों से वेद विधि पुरस्सर धूमधाम के साथ सम्पन्न किया गया ।

यह अति दुर्लभ सेवा प्रतिमाओ का रंग काम एवं मूर्ति प्रतिष्ठा, यज्ञ कार्य, ठाकुरजी का भोग, संत-वर्णी, पार्षद इत्यादि को रसोई, ठाकुरजीको अन्नकूट यह सभी सेवा कार्य मेणावाला श्री

## श्री नरनारायणदेव के मंदिर का सेवा यज्ञ

सभी सत्संग समाज को ज्ञात हो कि भगवान श्री स्वामिनारायण ने जिन महाप्रभु भगवान नरनारायदेव को सर्व प्रथम अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया था । यह मंदिर भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा से स.गु. आनन्दानंद स्वामी ने तीन शिखर मंदिर तैयार करवाया था । जिसे बने हुए १८५ वर्ष बीत गया । इसके जीर्णोद्धार करने का विचार किया गया है । जिसमें सम्पूर्ण मंदिर के साथ शिखर से लेकर फ्लोरिंग तक मारबल का पत्थर लगाने की योजना है । इस मंदिर के चारो तरफ प्लींथ को भी नवीनता से युक्त शिल्प शास्त्र के अनुसार नये ढंग से किया जायेगा । इस अलभ्य सेवा का लाभ प्रत्येक हरिभक्त को लेना आवश्यक है । इसलिये कोठार में रकम जमा कराकर पक्की रसीद प्राप्त करलें । विशेष जानकारी के लिये प्रत्यक्ष मिले ।

*लि. महंत स्वामीकी आज्ञा से*

खीमजीभाई भगवानदास पटेल परिवार ने किया । यजमान परिवार श्री रतिभाई खीमजीभाई पटेल ( ट्रस्टीश्री श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर ) तथा श्री गोविंदभाई खीमजीभाई पटेल एवं उनके पुत्रों ने यज्ञ में भाग लेकर धन्यता का अनुभव किया था । *- भुरा भगत*

**कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में मारुति यज्ञ**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी गुस्प्रसाददासजी एवं कोठारी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से चैत्र शुक्ल-१५ के दिन मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था । जिस में बडी संख्या में भक्त उपस्थित होकर लाभ लिये थे । पूज्य बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी ।

प.पू.बडे महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभा संचालन को. यज्ञप्रकाशदासने किया ।

*- भरतभाई*

**नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर**

श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के आशीर्वाद से एवं महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से सत्संगकी विशेष जागृति के लिए प्रति महीने प्रथम रविवार को सायंकाल ७ बजे से ९ बजे तक सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । जिस में कथा, कीर्तन, भक्ति इत्यादि संतो द्वारा की जाती है । धीरजाख्यान की सुंदर कथा शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने की थी । सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामीने की थी ।

*- बालू स्वामी*

**धरियावद (राजस्थान)**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से धरियावद श्री स्वामिनाराय मंदिर में चैत्र शुक्ल-९ को १०-१० बजे श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव एवं दोपहर में १२-०० बजे भगवान श्रीराम का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया । चैत्र शुक्ल पूनम को श्री हनुमान जयंती के शुभ अवसर पर मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था । महंत वासुदेवचरणदास की प्रेरणा से श्रीरामलजी पंचाल एवं गोपीचंद झीणा ( म्यालागाँव ) अन्नकूट के यजमान पद का लाभ लिये थे । साधु सुखनंदनदास एवं गणपत भगतने सेवा कार्य किया था । हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर आनंदित हुए थे । *- साधु अचलप्रकाशदास*

**उनावा मंदिर में रजत शताब्दी जयंती उत्सव सम्पन्न**

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से एवं प.पू. बडे महाराजश्री तथा वर्मतान पीठाधिपति आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से उनावा में शिखर मंदिर के २५ वर्ष पूर्ण होने से तथा श्री स्वामिनारायण भगवान की चित्र प्रतिमा की प्रतिष्ठा को १२५ वर्ष पूर्ण होने से रजत शताब्दी महोत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ ।

उनावा मंदिर के महंत स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी कांकरिया के महंत स्वामी गुस्प्रसाददासजी एवं आनंद स्वामी के मार्गदर्शन में १६-४-०७ के दिन पूज्य बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण प्रदर्शन एवं महोत्सव को दीप प्रगट करके प्रारम्भ किया गया था। पारायण के वक्तापद पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजीने अपनी सुमधुर शैलीमें कथाका अमृत रसपान कराया था ।

सभासंचालन कांकरिया के संत यज्ञप्रकाशदासजीने किया था । १२५ कुंडी विष्णुयाग एवं समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था । ता. २०-४-०७ के दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं ठाकुरजी को शोभायात्रा पूरे गाँव में निकली थी, जिसमें भारी संख्या में संत-भक्त भाग लिये थे । बाद में मंदिर में बिराजमान राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का महाभिषेक पूज्य महाराजश्री ने अपने हाथों से किया । बाद में श्री हनुमानजी एवं गणपतिजी महाराजकी प्राण प्रतिष्ठा, अन्नकूट की आरती प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अपने बरद हाथों से की । कथा पारायण की पूर्णाहुति हुई । गाँव के हरिभक्तों ने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का गुस्पूजन करके कृतार्थता का अनुभव किया । सभा में पधारे हुए संत प्रसंगोचित प्रवचन किये थे । अंतमें महाराजश्रीने सभी सभाजनो को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । प.पू. महाराजश्री १२५ कुंडी विष्णुयाग की पूर्णाहुति की थी । इस गाँव के तथा अगल-बगल के गाँवो से बहुतायत में भक्तजन पधारे थे जिनके खाने-पीने की समुचित व्यवस्था की गयी थी । हजारों भक्तों ने देव-आचार्य का दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था । *- को. शामलभाई*

**बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर**

प.पू बडे आचार्य महाराजश्री तथा वर्तमान पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी ( मूली ) की प्रेरणा से स्वा. हरिवल्लभदासजी एवं सुव्रतस्वरूपदास के मार्गदर्शन में चैत्र शुक्ल-९ के दिन श्रीहरि प्रागट्योत्सव के दिनश्रीहरि प्रागट्योत्सव, कथा-प्रवचन, धुनि-कीर्तन इत्यादि को धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर घनश्याम बालचरित्र कथा का सुंदर आयोजन किया गया था । चैत्र शुक्ल १५ के दिन श्री हनुमान जयंती के निमित्त संत-हरिभक्तोंने अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेवके दर्शनार्थ पदयात्रा

निकाली थी । श्री रतीभाई खीमजीभाई पटेल ( ट्रस्टी श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद ) बोपल-आंबली श्री नरनारायणदेव के आश्रितो के लिए यहाँ मंदिर निर्माण करके भक्तों के लिये बडा हित का कार्य हुआ है ।- *प्रवीणचंद उपाध्याय, आई.पी.एस. रीटेड*

### नवा वाडज मंदिर

नवा वाडज मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण का पंचाह पारायण १९-३-०७ से २३-३-०७ तक शा.स्वा. घनश्यामप्रकाश-दासजीके वक्तापद पर हुआ ।

ता. २३-३-०७ को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजीका पाटोत्सव एवं कथा की पूर्णाहुति की गयी थी । इस अवसर पर प्रत्येक धाम से संत पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये थे ।

यजमान हरिभक्त श्री शंभुभाई एच. पटेल, श्री वालजीभाई कानजीभाई पोरिया ( धूलकोट ) सभी परिवारजन पूज्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

पाटोत्सव के दिन प्रसाद के यजमान श्री वालजीभाई एवं श्री हेमेन्द्रभाई सोनी थे । इस प्रसंग का दिव्य लाभ सभी भक्तों को मिला था । - *नानजीभाई वी. पटेल*

### अहमदाबाद पूर्व विस्तार बापूनगर में साप्ताहिक बाल सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं महंत स्वामी की प्रेरणा से प्रति रविवार को प्रात काल ९ बजे से १० बजे तक १ घंटे का बाल सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । श्री रमेशभाई हीरपरा इस सभा का संचालन करते रहते हैं ।

वर्तमान समय के बालक आनेवाली पीढी के लिये आधार हैं । इसी उम्र में उत्तम संस्कार का सिंचन किया जाय तो युवा वस्था में कलुषित वातावरण से बंच सकते हैं । इसके साथ सत्संग की दृढता बनती रहेगी । इस हेतु से प.पू. आचार्य महाराजश्रीने बाल सत्संग के संचालको द्वारा बाल सत्संग को अधिकपोषण मिल सके इस हेतु से एक आज्ञा की कि पूर्व विस्तार के अधोनिर्दिष्ट ६ स्थलों पर ता. १-४-०७ से प्रति रविवार का नियित १ घंटे का बाल सत्संग किया जाय, जिसका आयोजन प्रारंभ भी हो गया है - ( १ ) राजूभाई सुहागिया, बी-१५, बद्रिनारायण सोसायटी, निधि सो.के. सामने, ठक्करबापानगर रोड । ( २ ) घनश्यामभाई तथा कन्हेयालाल, सी-१६, वंदनापार्क सोसा., तारवालाईन, हीरावाडी रोड । ( ३ ) घनश्यामभाई सुखडिया, श्री नरनारायणदेव देश का विराटनगर, श्री स्वामिनारायण मंदिर । ( ४ ) रामभाई - ए-३९, मीरापार्क, वि-२, नारायणनगर के अन्दर, नेशनल हाईवे नं.-८ । ( ५ ) अरविंदभाई, ए-१०, मनोरथ फ्लेट गीगेवपार्क, उत्तमनगर के पास, निकोलगाँव रोड । ( ६ ) जवेरभाई, १, हरिकृष्ण फ्लेट, ठक्करनगर ।

प्रत्येक स्थल पर करीब ५० बालक सत्संग सभा में लाभ ले रहे हैं । सभा में आने वाले बालकों में संस्कार सिंचन के लिए न.ना.देव युवक मंडल एप्रोच-बापुनगर के सक्रिय युवा हरिभक्त सुंदर सेवा कार्य कर रहे हैं । सभा का समय एवं अन्य विशेष जानकारी के लिए श्री जवेरभाई, मनोजभाई अथवा महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी का सम्पर्क करें ।

*- गोरधनभाई सीतापरा*

### साबरमती विस्तार में सत्संग सभा

सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर द्वारा संचालति सत्संग सभा का आयोजन पूर्णिमा को किया जाता है । जिस में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी एवं सत्यस्वरूपदासजी कथा का सुन्दर लाभ देते हैं । यहाँ की सभा में आने के लिए सभी भक्तों से अनुरोध है । सभा के प्रेरक छोटे पी.पी. स्वामी है ।

*- रावजीभाई पटेल श्रीन.ना.देव यु. मंडल*

### कपडवंज में (१६० वर्ष पुराने) मंदिर की खातविधि

कपडवंज में १६० वर्ष पुराने श्री स्वामिनारायण मंदिर के जीर्ण होने से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर की खात विधि बडे धूमधाम के साथ सम्पन्न की गयी । इस प्रसंग पर विद्वान संतोने प्रेरक प्रवचन करके मंदिर में सहयोग करने को कहा । अंत में समस्त सभा को प.पू. महाराजश्री ने अपने आशीर्वाद में बताया कि श्रीजी महाराज अति शीघ्र इस मंदिर में आकर विराजमान होकर आप सभी को दिव्य दर्शन का लाभ देकर सुखिया करें । यजमान के रूप में श्री भावेशभाई आर. पटेल थे । सभा में हरिभक्तोंने महाराजश्री के चरणस्पर्श-दर्शनका लाभ लिया था । स्वा. आनंदस्वरूपदास, स्वा. सिध्धेश्वरदास प्रेरक प्रवचन किये थे ।

*- आर. एस. पटेल*

### श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से असारवा गुरुकुल के संचालक पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से प.पू. महाराजश्री के प्रसादी के पुराने निवास स्थान श्री स्वामिनारायण बाग असारवा में पीछे कई वर्षो से श्री सहजानंद गुरुकुल कक्षा ५ से १० तक उच्च शिक्षण के साथ आध्यात्मिक शिक्षण देकर सत्संग को प्रेरणादायी बना हुआ है ।

ता. २५-३-०७ रविवार के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की

उपस्थिति में एवं संतवृद्ध तथा अभिभावकों की हाजरी में वार्षिक सम्मेलन किया गया था। कक्षा १० के विद्यार्थियों का बहुमान समारंभ रखा गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी विद्यार्थियों को उत्तरोत्तर प्रगति हेतु आशीर्वाद दिया था। - *अनिल पटेल*

**माणेकपुरगाँव**

माणेकपुर (घनश्यामनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र शुक्ल-१५ के दिन ३३ वाँ पाटोत्सव मनाने के निमित्त माणेकपुर के पाटीदार हरिभक्तों ने अहमदाबाद से माणेकपुर तक पदयात्रा का आयोजन किया था। इस प्रसंग पर नारायणघाट के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, छोटे पी.पी. स्वामी संतोने कथा का लाभ दिया था। - *महेन्द्र ए. पटेल*

**पालडी कांकज मंदिर में प्रथम पाटोत्सव**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से,पालड़ी कांकज मंदिर में ता. ११-४-०७ के दिन ठाकुरजी के प्रथम पाटोत्सव के प्रसंग पर महापूजा, अभिषेक, ठाकुरजी का अन्नकूट आदि स.गु. शा.स्वा. हरिओंप्रकाशदासजी तथा संत मंडल ने विधि कराई थी। इसके साथ कथा-वार्ता का लाभ भी सभी को मिला। पाटोत्सव के यजमान श्रीघनश्यामसिंह चौहाण थे। - *शा. भक्तिनंदनदास*

**सइज (ता. कलोल) गाँव में सत्संग सभा**

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सइज श्री स्वामिनारायण मंदिर में रात्रि सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जमियतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर से घनश्यामप्रकाशदासजी, भक्तिकेशवदास आदि संतमंडलने सर्वोपरि श्रीजी महाराज एवं धर्मवंशी आचार्य महाराजका महात्म्य बडे सरल ढंग से समझाया गया था।

युवान एवं बालक बडी संख्या में भाग लिये थे। - *स्वा. पूर्णप्रकाशदास*

**नवा वडझर (सरखेज) श्री स्वामिनारायण मंदिर**

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नवावडझर श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र शुक्ल-९ के दिन दोपहर में १२-०० बजे श्री रामचन्द्र भगवान का प्रागट्योत्सव एवं भगवान श्री स्वामिनारायण का प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिस में श्रीराजुभाई ठक्कर, श्रीप्रकाशभाई ठक्कर, श्रीनीतिनभाई ठक्कर की सेवा प्रशंसनीय थी। - *कोठारीजी*

**समौ श्री स्वामिनारायण मंदिर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सर्वोपरिश्री इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का २२६ वाँ प्रागट्यदिन चैत्र शुक्ल-९ के दिन समौ, गोजारिया एवं इन्द्रपुरा गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री न.ना.युवक मंडल द्वारा कथा वार्ता-कीर्तन-भक्ति आदि प्रोग्राम व्यवस्थित किया गया था। तीनो गाँव के भक्तजन बडी संख्या में दर्शन लाभ लिये थे। - *को. चौधरी भीखाभाई*

## मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

**सुरेन्द्रनगर मंदिर में श्रीहरि जयंती उत्सव**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामीकी प्रेरणा से चैत्र शुक्ल-९ को भगवान राम एवं भगवान स्वामिनारायण के प्रागट्योत्सव प्रसंग पर समूह महापूजा, धुनि, शोभायात्रा शहर के राजमार्ग पर सुशोभित वाहनो के साथ निकली थी। रात्रि में १०-१० मिनट पर श्रीहरिका प्रागट्योत्सव मनाया गया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणास्रा रही। - *शैलेन्द्रसिंह झाला*

**जीरागढ (हालार) श्री रोकडिया दादा के मंदिर का पाटोत्सव**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हालार के जीरागढ रोकडिया दादा के पाटोत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री जयंतीलाल परसोत्तमभाई मनाणी के यजमान पद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन का पारायण शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासने किया। उत्सव का शुभारंभ पूज्य बडे महाराजश्री के हाथों से हुआ। पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उन्हीं के हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव के पारायण की पूर्णाहुति हुई थी। प्रासंगिक सभा में मूली के महंत शा. ज्ञानवल्लभदासजी तथा अन्य विद्वान संतो ने प्रवचन किया था। हरिभक्तोंने आचार्य महाराजश्री के चरण स्पर्श-दर्शन का लाभ प्राप्त किया। समस्त सभाजन को पूज्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

जीरागढ मंदिर के ट्रस्टी, कोठारी आदिने सुंदर व्यवस्था की थी। सभा संचालन भरत मारवीने किया।

- *शांतिलाल वरु*

**श्री स्वामिनारायण लखतर**

श्री स्वामिनारायण मंदिर लखतर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चैत्र शुक्ल-९ के दिन श्रीहरि जयंती प्रात-८ बजे से रात्रि १० बजे तक मनाई गयी, जिसमें श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि सभी भक्तों ने की। जिसके प्रेरक श्री लालजीभाई शामजीभाई पटेल थे।

- *पटेल अमृतभाई हीरजीभाई*

## विदेश सत्संग वृत्तान्त

### शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O. अमेरिका)

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं महंत स्वामी धर्मवल्लभदास की प्रेरणा से ४ मार्च रविवार को श्री नरनारायणदेव जयंती के शुभ अवसर पर झूले को नानाविध पुष्पों से सजाकर उस पर भगवान नरनारायणदेव को बैठाकर बडी श्रद्धा के साथ बहनों ने झुलाया था। महाप्रभु नरनारायणदेव की महिमा का गान संत-भक्तोंने खूब सुंदर ढंग से किया। महंत स्वामी ने श्री नरनारायणदेव के महात्म्य को बताया था। प्रमुख श्री जगदीशभाई ने सभा में बडे महाराजश्री का संकल्प "श्री स्वामिनारयण म्युझियम"के लिये महत्व समझाया था। महंत स्वामीने यजमानो को पुष्पहार से स्वागत किया था। बाद में नरनारायण देव की आरती उतारकर प्रसाद वितरण किया गया था। युवक मंडल एवं महिला मंडल की सेवा प्रशंसनीय थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कृपा से सत्संग प्रवृत्ति सुंदर चलती है।

### ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O. अमेरिका)

टेकसास स्टेट के अपने श्री स्वामिनारायण मंदिरमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहां ७वाँ पाटोत्सव ९-३-०७ से ११-३-०७ तक धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित स्नेहगीता का त्रिदिनात्मक पारायण स्वा. कृष्णप्रसाददासने बडे सुंदर ढंग से समझाया था। छोटे बालक सत्संग के प्रेरक नाटक प्रस्तुत करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिये थे। समूह महापूजा में बहुतायत में हरिभक्त भाग लिये थे। षोडशोपंचार से ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था तीनो शिखर पर ध्वज चढाया गया था। बाद में छप्पन भोग, अन्नकूट के दर्शन का सभी को लाभ मिला था। अंत में अपने मंदिर के प्रमुख श्री मनजीभाई हीराणीने सेवा करनेवालो का आभार व्यक्त किया था। नवयुवान नवयुवतियों की सेवा प्रेरणादायी थी।

१ अप्रैल को श्रीहरिका प्रागट्योत्सव मनाने के लिये बहुत सारे भक्त तैयार हुए थे। श्रीहरिकृष्ण महाराज के प्रागट्यो की सुंदर कथा के.पी. स्वामीने की थी। कोलोनिया से आये हुए भक्तिकिशोर स्वामीने भगवान का महात्म्य समझाया था।

८ अप्रैल को हनुमान जयंती के दिन हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था। के.पी. स्वामीने हनुमानजी की कथा में सभी को तरबोर कर दिया था। चैत्री पूनम का दर्शन करने अनेको भक्तजन आये थे। इस प्रकार यहाँ ह्युस्टन मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्री की कृपा से उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

*- रमेश टी. पटेल*

### वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

३१ मार्च शनिवार की शाम को २॥ घन्टे की सत्संग सभा में २७३ वचनामृत में से कथा, कीर्तन, भक्ति, नियम एवं ठाकुरजी को थाल-आरती समूह में की गयी थी। श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्यो दिन पर उत्तमढंग से कार्यक्रम किया गया था। जिसमें संतोने कथावार्ता की थी। प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। *- कनुभाई पटेल*

## अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध संत स.गु. स्वामी नरहरिप्रसादासजी गुरु स.गु. अर्जुनप्रसाददासजी ( विगत कई वर्षो से जेतलपुर में भजन करते थे ) ता. ८-४-०७ के दिन श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं। प.पू. आचार्य महाराश्री की अत्यंत कृपा थी।

अहमदाबाद ( नवावाडज ) : श्री रमेशभाई एवं श्रीनवीनभाई मारफतिया की बहन अ.सौ. चंद्रिकाबहन चंन्द्रकांतभाई पटेल ता. ११-४-० के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं। श्रीजी महाराज उनके परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दें ऐसी प्रार्थना।

वहेलाल : श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान श्री महेन्द्रभाई पटेल ( उ. ७५ वर्ष ) ता. २३-३-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।





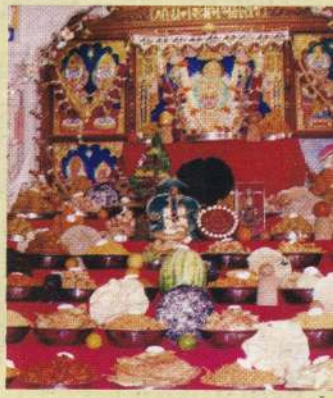
बामरोली ( मध्यप्रदेश ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.अ.सौ. बडी गादीवाला के दर्शनार्थ पधारे हुए तथा कथा श्रवण करते हुए स्थानिक हरिभक्त एवं ठाकुरजीका अन्नकूट दर्शन ।



कपडवंज मंदिर की खात विधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



विसनगर में श्रीहरि के प्रसादी के महादेवजी एवं हाथी ( महाराजने पत्थर के हाथी को लाडु खिलाया था ) उस दिव्य स्थल पर दर्शनार्त पधारे हुए प.पू. महाराजश्री ।



नवा वाडज मंदिर में पाटोत प्रसंग पर अन्नकूट दर्श



कांकरिया मंदिर में मासंति यज्ञ की पूर्णाहुति करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री साथ में महंत स्वामी एवं संत मंडल ।

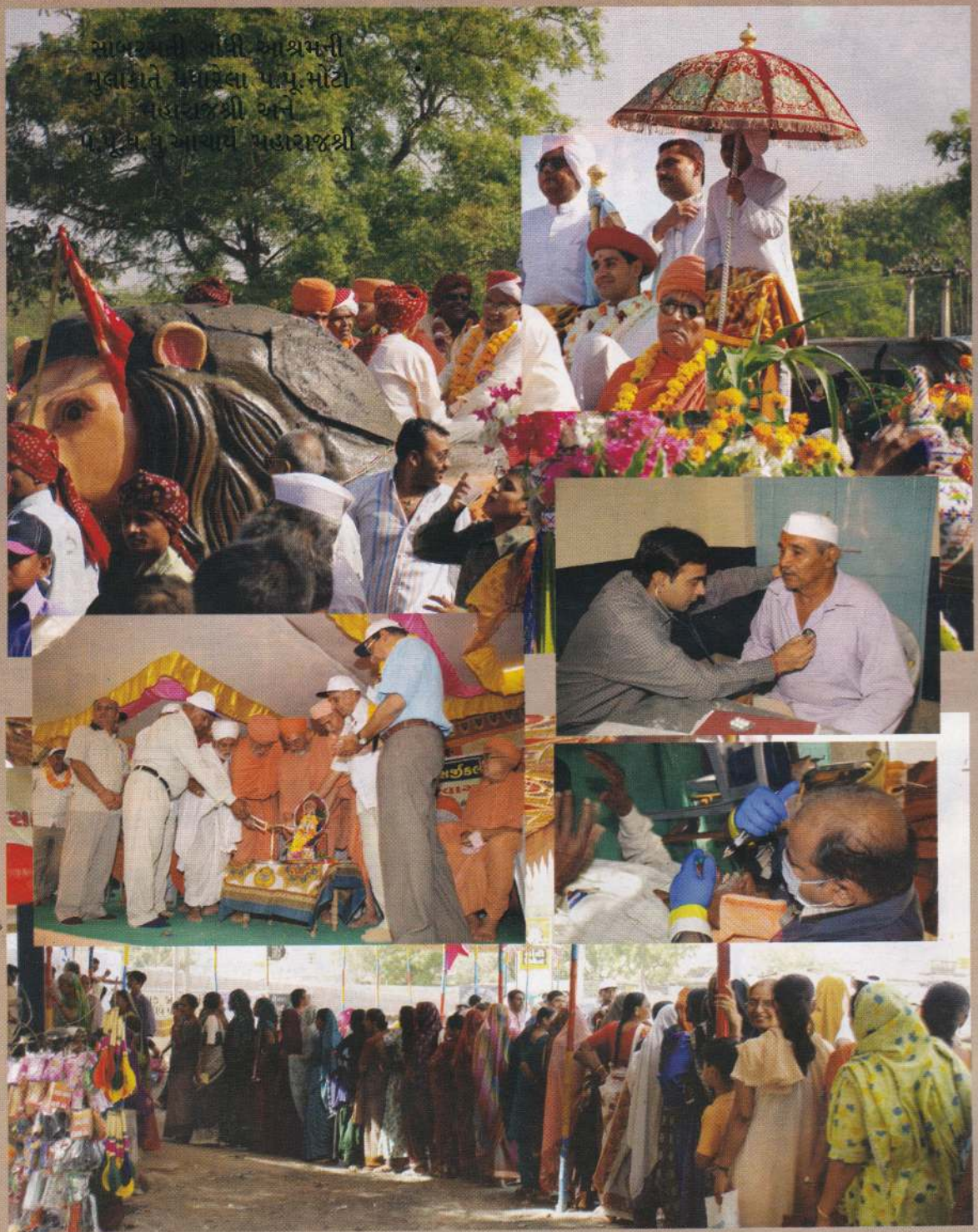


प्रसादी के गामडी गाँव में बीरेश्वर महादाव मंदिर में आरती उतारते हुए प.पू. बडे महाराजश्री के साथ लाभ लेते हुए पी.पी. स्वामी ।



बद्रीनाथ धाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में नूतन धर्मशाळा का सूचित प्लान ।

Registered under RNI - No - applied Followed by words " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08



बडदियां ( कंच्छ ) अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर ( वहनो के ) की मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाजश्री तथा मेगा मेडीकल कैम्प को खुल्ला करते हुए भुज के महंत स्वामी तथा लाभ लेते हुए स्थानिक हरिभक्त ।

raful Kharsani